तलाश

'बूंदें'-5

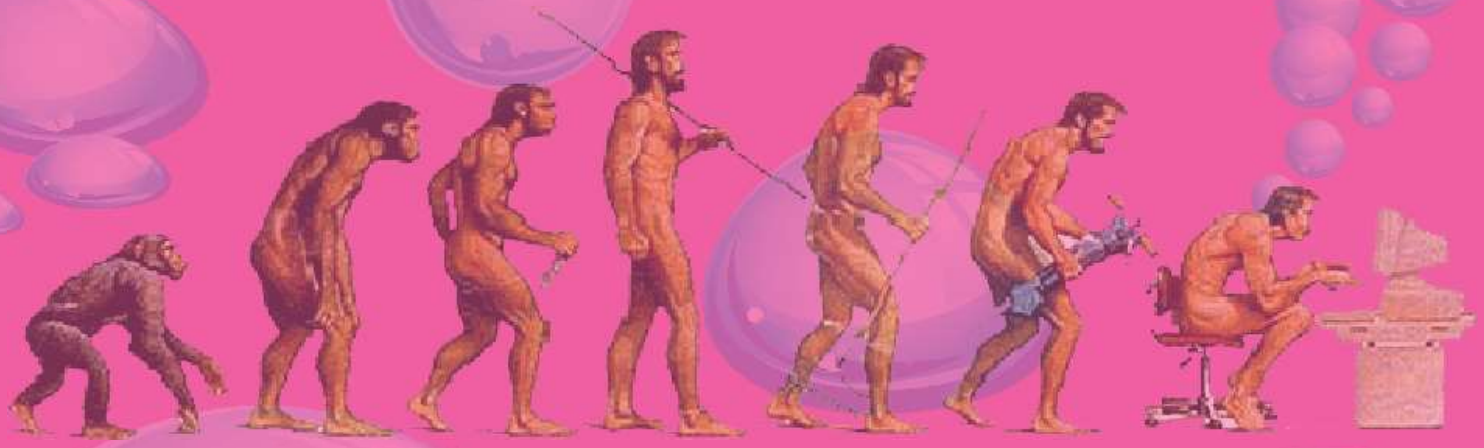

धर्म : समाज : मानव

प्रो. (डॉ०) विश्वेन्द्र कुमार सिन्हा

समर्पण

2026

उन गुड्डे एवं गुड़ियों को -
जो दिलोजान से प्यार किये जाने पर जीवन्त हो उठेंगे।

तलाश के लोग

तलाश एक आन्दोलन

आपसे मुखातिव !

ये सिर्फ बूंदें हैं - एक दो पड़ जाने से ध्यान भी नहीं जायेगा, बहुत सारे मिलकर आपको भिंगो दे सकते हैं या फिर यूँ ही बह जायेंगे।

बूंदे क्षणिक हैं, कुछ सामयिक जो समय के साथ अप्रासंगिक हो जायेगें, कुछ दीर्घकालिक है, कुछ शाश्वत होने की तरफ हैं, कुछ अत्यन्त व्यक्तिगत अभिव्यक्ति हैं, कुछ अनुभवगम्य, कुछ अन्य महानुभावों की समझ से प्रेरित (उनसे सविनय याचना के साथ)!

बूंदे जो इकाई है ..... सागर की।

तलाश

- गलत को गलत कहें
- अच्छा को अच्छा कहें
- अपनी आमदनी वाजिब तरीके से प्रतिदिन बढाएं
- रचनात्मक सामूहिक सोच का निर्माण करें
- सभी कार्य अराजनैतिक एवं अहिंसात्मक हों

मिलें तो सही..... बातें तो हों.....

विश्वेन्द्र कुमार सिन्हा

सनातन को मत बांटो

- सनातन पुरातन है |
- इसको प्रतीकों, परम्पराओं और मूर्तियों में न समेटो; न इन रूपों में बांटों; यह इससे बहुत ऊपर है | किसी भी सभ्यता, धर्म, संप्रदाय से बहुत बहुत ऊपर-! परिभाषा से ऊपर !
- सिर्फ 'बटोगे तो कटोगे' के नारे से लोग नहीं जुट रहे हैं |
- **बाटोंगे तो खुद भी कटोगे !**

पहलगाम और उसके बाद

- धर्म पूछ कर मारा, निश्चित रूप से पूर्व निर्धारित था, दूसरे देश के लोग थे|
- बहुत मौलानाओं और उनसे बढकर ममता, अखिलेश, वाड्रा, स्टालिन, सिब्बल जैसे अन्य ये धर्म पर अनैतिक, गैर कानूनी, देश हित के विरुद्ध न्यायाधीशों पर दबाव डालकर बचाव और वार क्यों करते हैं|
- इन तत्वों के इलाज में क्यों कोताही है ? यहाँ तो हमारा कानून हमारी व्यवस्था है|
- पहलगाम के बाद लोग खूब भाषण देकर हिन्दू-मुस्लिम का भेद समझा रहे हैं, हर मुस्लिम दोषी है, अविश्वनीय है, यह माहौल बनता जा रहा है | गृहयुद्ध का परिणाम अच्छा नहीं होता है, अनन्तकाल तक रहता है|
- सबसे दुःखद यह बात कि भारत की सेना मारेगी, मोदी मारेगा, हम ताली लगायेगें - वैसे ही जैसे सोमनाथ मंदिर के लूटे जाने के समय उस रास्ते के दोनों तरफ लोग यह देख रहे थे कि कोई करामात होगा और सब आक्रांता समाप्त हो जायेगा, सोमनाथ लुट गया, पुजारी मारे गए; वही हश्र पुनः होगा क्योंकि मानसिकता वही है|
- भारतीय सेना के एक्शन पर भी बातें उठने लगी | किसी को यह समझ/हिम्मत नहीं है कि एक कदम मुझे भी बढ़ाना है – मोरल नहीं, फिजिकल ?!

Contd.

- सभी (स्त्री/पुरुष) के लिये सैन्य शिक्षा/ सेवा अनिवार्य होना ही चाहिये, अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा का अधिकार मिलाना चाहिये/अपनी जिम्मेवारी खुद भी लेनी ही होगी|
- मार कर/लड़ते हुये मरना, गिड़गिड़ाते हुये मरने से कम दुखदायी होगा|
- अमानवीय धर्म, धर्म की अमानवीय व्याख्या, धर्म के नाम पर राज करने वाले, धर्म का अंधानुकरण करने की अपेक्षा, मानवीय गुणों का समर्थन करने वाले, पूरे विश्व को रहने लायक बनाये रखने वाले, सनातन जीवन पद्धति वाले, ईसाई, वौद्ध, अन्य, एवं आधुनिक मुस्लिम आबादी वाले कई देशों को मिलकर पूरे विश्व को सोचना ही पड़ेगा|
- अभी 'हिन्दू विजय' 'गजावाये हिन्द' की स्थापना के बाद यह धार्मिक असहिष्णुता चुप बैठ जायेगा क्या? यह दूसरे कमजोर ग्रुप को मिटायेगा? तर्क नहीं, विज्ञान नहीं, उद्वेग की बात है|
- विदेशियों द्वारा धर्म पूछ कर मारने का मतलब है यह धर्म नहीं देश की बात है|
- पहलगाम हो या पुलबामा, संसद पर हमला हो या मुम्बई काण्ड का कसाब या बेकरी फैक्ट्री काण्ड; सही उपाय, इनके कमर तोड़ने का कार्य, preventive (रोक)/ असली इलाज तो सपा नेता, तृणमूल, कांग्रेस नेता, भारत तेरे टुकड़े होगें गैंग, सुप्रीम कोर्ट को पाकेट में रखने वाले बड़े वकील, JNU, बहुत ख़ास पत्रकारों का होना जरुरी है|

धर्म : ज्ञान : विज्ञान

- धर्म एक समय का 'ज्ञान' हैं, अध्यात्म अलग है|
- धीरे धीरे विज्ञान ने अपने आप को सिद्ध कर दिया है, स्थापित कर दिया है, करता ही जायेगा | लोग इसके पक्षधर होते ही जायेगें|
- अन्तिम या सम्पूर्ण ज्ञान/विज्ञान का अंत नहीं है|
- विज्ञान सर्वजनिक है, भविष्य है, धर्म/विश्वास व्यकिगत है / सामूहिक हो सकता है|
- ब्रहमाण्ड की जानकारी के लिए (विश्वास के लिए नहीं) विज्ञान ही है|

'सनातन पूजा में हुल्लड़बाजी'

- होली, दशहरा, दिवाली, सरस्वती पूजा, (अब छठ में भी) में शास्त्रोक्त पूजा अपनी जगह है, कोई विवाद नहीं, परन्तु मुझे नहीं लगता कि इनमें कहीं भी हुल्लड़बाजी, उच्चतम स्तर पर धक-धक करता नहीं कराता, संगीत नहीं शोर का कोई स्थान है; सरस्वती पूजा में फूहड़ गानों और नाच का कोई कारण है? सनातनी पूजा में इसका कोई जिक्र है ?
- इससे सिर्फ धार्मिक भावना का ह्रास होता है, दुसरे धर्मो की बात नहीं परन्तु तथाकथित इसमें शामिल होने बालों में भी कम ही लोग इसे पसंद करते है | एक उम्र वर्ग के नाकारा हुल्लड़बाजों को जिनकी महिमा इन्ही अवसरों पर इन्ही कारणों से होती है या जिनकी जबरदस्ती है, को छोड़कर कोई भी इसे पसंद नहीं करता है |
- सर्वे होनी चाहिये, बदलाव/प्रतिबंध आवश्यक है | यह धर्म के मर्यादा के विरुद्ध है |

सनातन की वैज्ञानिकता |

- मुझे सचमुच गर्व है कि मैं मानव की उस आद्वितीय आदर्श परम्परा की कड़ी हूँ जिसे लोग सनातन कहते हैं|
- इधर सोशल मिडिया पर हर सनातन परम्परा/विश्वास रीती रिवाजों को वैज्ञानिक बताने की होड़ लगी है, खान पान, रहन, पहनावा, रीती रिवाज, शादी-व्याह इत्यादि सबकुछ जो लोग किये जा रहे हैं, शायद आदत वश|
- परन्तु कुछ सवाल उगते है :-
- सवाल/तर्क/ और पुनः दुहराये जा सकने वाले प्रमाण ही विज्ञान है|
- 6 वर्षिय 'फ्लोरा' का सवाल “सोमनाथ का मंदिर जब तोड़ा जा रहा था तो भगवान जी उस समय वहाँ नहीं थे”? अभी भी मेरे मन में अनुत्तरित है ?
- यह सवाल ऐसी किसी भी, कहीं भी समरूप से लागू है|

कौन सनातन नहीं है ?

- मूल सवाल यह है कि जो लोग तथाकथित सनातन परम्परा के अनुरूप जीवन शैली/ विश्वास नहीं रखते वे आपसे कमतर है, बराबर है या भारी हैं ?

- माफ करें बुरा लगेगा – केवल उदाहरण के लिए कहा जा रह है, जो गाय खाते हैं – पूरा पश्चिम, जापान, चीन एवं अन्य में क्या खरावी दिखती है – स्वास्थ्य हो या वैज्ञानिक प्रगति, यह भी कहना अनुचित होगा कि उनमें ईसाई हों, मुसलमान हों, बौद्ध हों, आध्यात्मिक उंचाई हासिल करने वाले नहीं है या नहीं हुए !

- आधुनिक सारे वैज्ञानिक तो उधर ही पैदा हुये,हो रहे हैं,

- कुछ तो आंतरिक / व्यवहारिक गड़बड़ी है जिसके चलते सनातन आज सिमटते हुए, मिट जाने की कगार पर आ खड़ा हुआ है |

Contd.

- क्या टीक, टीका, जनेऊ के द्वारा सामाजिक पृथक्कीकारण, अपरिभाषित हिंसा/ अहिंसा का धर्मोपदेश;"Live and Let die"या 'sevival of fitted' की जगह 'जिओ और जीने दो' की अप्राकृतिक मान्यता, कमजोरी, सामूहिक, सर्वव्यापी, सामाजिकता / धर्म की वाध्यकारी नियम / नीति/अनुशासन की जगह आत्मकेन्द्रित आध्यात्म, आत्मघाती उदारता इसका कारण नहीं है ?

- अब चीजों को आँख मूंद कर नहीं आँख खोलकर करने/समझने की आवश्यकता है, अपनी ही पीठ थपथपाने से क्या होगा|

- अपनी रूढ़ियों को त्याग, पश्चिम के अंधानुकरण एवं, गुलाम मानसिकता से निकलना आवश्यक है|

धर्म : धर्म-ग्रंथ

- इनकी उत्पति, आवश्यकता, उपयोगिता पर सम्यक विचार करने की आवश्यकता है|
- ये विभिन्न होते हुए भी यदि मानव को सही दिशा देने में समर्थ न हों और एक दूसरे के विपरीत हों तो आधुनिक समाज के लिए यह विचारणीय है|
- इनकी (धर्मो/सम्प्रदायों/धर्म ग्रंथों की) उत्पति के पहले का धर्म क्या था और आज हजारों वर्षों के बाद क्या फर्क आया, देखना होगा|
- धर्म व्यक्तिगत है, सामजिक व्यवस्था या प्रशासनिक व्यवस्था और किस हद तक, यह भी विचारणीय है|
- महान जीव विज्ञानी डारविन के सिद्धांत को चर्च ने स्वीकार नहीं किया था – अंततः उसे वैज्ञानिक रूप से सही सोच, तार्किक और प्रमाणित माना गया | इससे किसी धर्म या विशवास की हानि भी नहीं हुई|
- आज और आने वाला 'कल' कृत्रिम वुद्धिमता (AI) की हो ही जानी है ऐसे में धर्मों एवं धर्म ग्रंथों का क्या रोल रहेगा; समय ही बतायेगा|
- कम-से-कम यह तो समझ में आता है कि धर्मान्धता व्यक्तिगत या सामूहिक तो आज भी गलत है|

धर्मः समाज

- धन्य है सामान्य जनमानस|
- सैल्यूट! जो इतनी आंच सहती है, पचाती है अभी-तक उबली नहीं है | पिछले कुछ समय से अपने देश में हिन्दू/सनातन/इस्लाम पर कितने भड़काऊ बातें होती रही है कि मन अक्सर बिचलित हो जाता है | जो लोग इसके बहाव में बहते हैं कितनी क्षति अपनी और लोगों की कर देते हैं|
- कितना अद्भुत है; अबतक कि जिन्हें यह अपना नेता मानता है/चुनता है, रहनुमा/शुभचिंतक मानता है, धार्मिक नेता, गुरु, सद्गुरु मानता है, धार्मिक राजनैतिक /सामाजिक पद धारक इत्यादि हैं उनके रात दिन हल्ला करने के बाद भी एक सामाजिक सामंजस्य चल रहा है | उदाहरण देने नहीं अनुभव करने की चीज है|
- गड़बड़ियाँ तो निश्चित होगी, विष तो निश्चित है परन्तु सामान्य मानव न जाने किसी ताकत से इन्हें पचाता/भूलता जा रहा है|
- कई बिमारियों के कई Vector हैं, पशु और पक्षी भी और सबसे ज्यादा मच्छर, परन्तु

Contd.

परन्तु

- सामाजिक बिमारियों का एक मात्र Vector मिडिया है (एक मात्र कीटाणु/विषाणु राजनेता, धर्म नेता हैं |)– प्रिंट भी इलेक्ट्रोनिक भी,

- गलत, अर्धसत्य, अतिश्योक्ति नीले फीते (PORNO) मिडिया (एमप्लिफार या न्यूनीकरण) करता है; TRP बढ़ाने के चक्कर में ! फिर भी एक समरस्ता कायम है|

- अपने उत्तरदायित्व, समझदारी, सबसे ज्यादा सोच की इमानदारी सब स्वाहा; पुनः सामान्य जनमानस की जय हो ! जो इसे पचाती जा रही है |

धर्मान्तारण

- कट्टर से कट्टर हिन्दुवादी से यदि 'हिन्दुत्व' की 'एक' परिभाषा पूछी जाय तो वे नहीं दे सकते क्योंकि यह न कोई धर्म है, न सम्प्रदाय है, इसका न कोई संस्थापक है , न इसका कोई सीमाकंन है | धर्म की परिभाषा "धारण करने योग्य है" न कि कोई चहारदिवारी |
- सनातन तो सनातन है |
- यह तो मानव की अनन्त चिन्तन जिज्ञासा के लगातार मंथन से उत्पन्न विधारधारा है, तार्किक निष्कर्ष है |
- इसका शोर्ष या निष्कर्ष तो अद्वैत (दूसरा नहीं) है |
- इसपर रहने वाले बहुत कम संख्या में, बहुत कम भौगौलिक क्षेत्र में बहुत कम लोग रह गए हैं |
- सनातन का 'तत्व' हर धर्म, सम्प्रादय, पंथ वालों के अच्छे लोगों में यह मौजूद है |
- विभिन्न समुदायों द्वारा सबसे ज्यादा धर्मान्तरण/चोटें इसी पर है, बहुत सुविधाजनक है न कठोर संगठन है, न प्रतिवद्धता, न कोई सरकारी सुरक्षा, हर किसी की सुनना; और गरीबी या खास कारणों से, 'लाभ' के लोभ से अन्तरण बड़ा आसान भी है |

अद्वैत : सनातन

- इस्लाम अद्वैत है|
- और भी पंथ अद्वैत की बात करते है, परम पुरख, अल्लाह, इसाई – इत्यादि, परन्तु वे यह भी कहते है की सिर्फ यही सही है और इसके लिये ये- ये विधान हैं |यही (विधान) गलत है|
- यह भी समझ में नहीं आता कि यदि कोई भी एक ही 'धर्म' की स्थापना हो जायेगी तो क्या मानवीय त्रासदी समाप्त हो जायेगी|
- गैर बराबरी, गरीबी और झगड़े समाप्त हो जायेगें, निराकार ब्रहम, सगुन उपासना, निरंकारी हीन यान, महायान प्रोरेस्टेट और कथोलिक सिया और सुन्नी एक हो जायेगे|तो क्या मानव त्रासदी मुक्त हो जायेगा ?
- मिसाईलें एवं परमाणु हथियार भुला दिये जायेंगे ?

धर्मान्तरण : समझ से परे

- यह समझ के परे है कि क्या तथाकथित हिन्दुओं के समाप्त हो जाने से क्या पूरा विश्व एक धर्म मानने वाला हो जायेगा?
- क्या एक ही धर्म मानने वाले विश्व की स्थापना से मानव जाति का, मानवता का पूरा कल्याण हो जाएगा? शांति- हो जायेगी?
- विश्व क्षितिज पर ऐसा तो नहीं दिखता कि, प्रोसेंट/कथंलिक में, शिया/सुन्नी में, क्या एक ही धर्म वाले एक देश का दुसरे देश से लड़ाई नहीं है | हर व्यक्ति तो अकेला है; अनोखा है, अंतिम विवाद तो वहाँ है|
- अतः उपाय तो हर व्यक्ति की नीजी मान्यताओं की, स्वयत्तत्ता को स्वीकार करना है|
- "Right to disagree" (T.N. Sheshan) ही समाधान है| यही लोकतंत्र है, 'धारण करने योग्य' है | धर्म है|
- धर्मांतरण उद्देश्यहीन है|
- सभी प्रकार का धर्मान्तरण उद्देश्यहीन और दिशाहीन है|

Contd.

- यह समझ में नहीं नाता कि इससे किसी को भी क्या फायदा मिलता है ? कुछ असामाजिक आवांछनीय तत्वों, भाड़े के टटुओं को छोड़कर !
- धर्मान्तरण का वैचारिक अभियान चलने वाले को भी क्या मिलता है ?
- 32 करोड़ देवता हैं – हम जिस भगवान से खुश है, आप जैसे चाहे वैसे खुश रहें|
- इससे, सहज , इससे महान, इससे निर्विवाद बात और क्या हो सकती है|
- हिन्दुओं/हिन्दुत्व/सनातन के लोप होने से इस उदात्त भाव का / विचार का लोप मानव जाति मात्र, मानवता के लिए अत्यंत अहितकर होगा|

धर्म : मानवता

- धर्म और मानवता में भी चुनाव कठिन नहीं है|
- धर्माधंता और मानवता में तो बिल्कुल नहीं|
- मनुष्य से ज्यादा कांईया और दुष्ट कोई दूसरा जीव पृथ्वी पर दिखाई नहीं पड़ता|
- फिर भी उसका क़त्ल, सामूहिक हत्या, पिंजड़े में बाद कर जला देना...
- 'मनुष्यता' पर संदेह पैदा करता है|
- किसी दूसरी प्रजाति में 'रेप' का उदाहरण नहीं मिलाता है|
- जिससे वह खुद पैदा हुआ है, जो बहन है, जो जीवन संगिनी है, जो पूरक है,उसे दोयम दर्जे पर रखना भी समझ से परे है|
- धर्म, धर्माधंता, ईश्वरीय आदेश, सभी एक वास्तविकता 'कोरोना' नामक वायरस, बृहत आगजनी, दुर्मिर्क्ष प्रदुषण इत्यादि के सामने छू मंतर हो जाता है| सिर्फ समान्य बुद्धि का आदेश ही चल रहा है|
- यही हालत आर्थिक शक्ति के आगे होता है|
- कोई बताये 'मानवता' कहाँ है ?
- अमेरिका में, ब्रिटेन में, यूरोप में, चीन या रूस में, अरब में, UNO में कहाँ ?

धार्मिक सन्देश/आदेश

- धर्म के सन्देश का धार्मिक आदेश बनना धर्म का खात्मा है|
- धर्म तो सर्वव्यापी, सर्वग्राही, सुवासित सुरभि है|
- इसमें किसी के लिए भी नापसंदगी की चीज नहीं हो सकती, यह तो प्रकृति और प्राकृतिक है|
- धर्म का अनुपालन तो 'व्यक्तिगत उदाहरण' ही हो सकता है|
- पंण्डित, पुरोहित, पादरी, मौलवी जैसे कठमुल्ले धर्म को सीमाओं में बांधकर उसे शोषण दमन, विभाजन, लड़ाई, दंगे, फसाद को जन्म देकर महा अधार्मिक कार्य करते हैं|
- आजकल भ्रष्ट राजनिति करने वाले,सभी प्रकार के सेलेब्रिटी इस नश्तर को और भी भीतर तक चुभा रहे हैं|
- इनकी मदद करने वाले 'देश द्रोही' ही नहीं, समाज और मानवता द्रोही भी हैं|
- शस्त्र- अस्त्र की आवश्यकता उस आजादी की सुरक्षा के लिए आवशयक/अनिवार्य है जो दूसरों की आजादी की सीमा तक है|

धर्म:कानून

- संघ के रूप में सीमावद्ध धर्म सर्वग्राहकता का गुण खो देता है| धर्म का लोप हो जाता है;
- धर्म के लिए युद्ध, धर्मान्तरण के लिए विभिन्न उपाय न सिर्फ धर्म को विषाक्त करता है वल्कि उसे सबसे बड़े अधर्म में परिवर्तित कर देता है|
- धर्म सामाजिक अनुशासन, वैयक्तिक/आत्मानुशासन के रूप में लक्षित होता है|
- अनुभव गभ्य इसके निर्देश/सन्देश कालान्तर में रीती-रिवाज, कायदे और कानून बन गये|
- कानून एक हथियार होता है | हथियार बचाव और प्रहार दोनों कर सकता है|
- विज्ञान प्रकाश है अतः काफी हद तक सामाजिक है|
- विज्ञान अपूर्ण है|
- प्रकाश कभी अंधकार की हस्ती नहीं मिटा सकता है; अधिक से अधिक चीजों को प्रकाशित कर सकता है|

धर्म : अर्थ

- सोशल मिडिया पर बहुत सच्ची, झुठी चीजों की बाढ़ है|
- हिन्दुओं के लिए संगठित होने का कोई संदेश दूसरों के लिए संगठित होने का ज्यादा असरदार सन्देश है|
- क्या कभी भी भारत में हिन्दु या मुसलमान कर कोई भी जीत सकता है ?
- उन मुसलमानों को कैसे कोसा जा सकता है, जिन्होंने आक्रताओं के कारण, परिस्थितिवश, 'दुर्बलतावश', जिजिबिषा वश, धर्मान्तरण किया; पूरी तरह इसी धरती के बेटे हैं|
- थाईलैण्ड, इण्डोनेशिया आदि के राजा ने व्यापारिक आवश्यकतावश धर्मान्तरण किया|
- कभी भी कोई कौम, कोई धर्म, नहीं जीत सकेगा, सिर्फ भारत को जीतना है वही जितेगा|
- आदरणीय APJ Kalam, मो० हमीद, आरिफ मो० खां सरीखे लोग सिर्फ भारतीय हैं|

सामाजिक मुद्दे अक्सर अत्यंत जटिल होते हैं | जैसे – भारत में हिन्दू/मुसलमान

- भारतीयों /तथाकथित हिन्दुओं में जातिवाद का जन्म, पोषण और आज भी भीषण रूप से संवर्धन का मूल कारण सामजिक, आर्थिक वर्चस्व की प्राकृतिक लड़ाई है|
- हासिये में या उसके बाहर डाल दिए गए (पड़ गये) लोगों के लिए धर्म, देश, प्रशासन सभी वेमानी हो गया है | यह बहुत बड़ा (लगभग 80%) तबका था/है |
- यह हिन्दू समाज के विघटन का एक मुख्य कारक है |
- जो अधिकार प्राप्त थे, अधिकार/अर्थ की सुनिश्चितता के कारण अलोकतांत्रिक एवं आक्रामक हो गए | (वंचितों में भी व्यक्तित्व पैदा होते रहे है |)
- इस विभाजन के कारण सत्ता परिवर्तन के साथ बड़े स्तर पर धर्म-परिवर्तन हुआ |

धर्म : मानवता का विभाजक

- मानव जाति को बांटने/विभाजित करने का सबसे बड़ा कारक धर्म है|
- इस कारण सबसे बड़ा संहारक भी धर्म हुआ|
- भय/त्रासदी /मौत के कारक के रूप में राष्ट्रियता /जातीयता/ महामारी भी इसके सामने छोटे हैं|
- संगठन के रूप व्यक्ति की मानसिक, शारीरिक, सामाजिक जितने भी आयाम है, की स्वतंत्रता/अभियक्ति को छीनने/नकारने/ का काम भी 'धर्म' के कारण हुआ है|
- धर्म' की उपयोगिता के बारे में भारी संदेह है|
- धर्म शुरू में आकर्षक पथ प्रदर्शक रहता है, बाद में तानाशाही, प्रगट /अप्रगट आक्रांता हो जाता है|
- क्या बिना सामूहिक धर्म के व्यक्ति की पहचान नहीं रह सकती है ?
- धर्म समाज नहीं है|
- धर्म सीमायें खीचता है मानवी त्रासदी उत्पन्न करता है|

धर्म:समाज

- आफगानिस्तान की घटनाओं से बेनकाब विश्व समुदाय !
- विश्व समुदाय, वैश्विक राय, लीग आफ नेशंनस, UNO, NATO, WARSA, OPEC, SARC, BRICKS; etc खासमखास मानवाधिकार, सभी परिस्थितिजन्य संकीर्ण मकसदपूर्ण अस्थायी गठबंधन मात्र है|
- इनका उपयोग अपने लाभ/लोभ के लिए चतुराईपूर्ण होता है|
- धर्म तो नहीं परन्तु धर्म का सगंठन होना भी ऐसा ही है|
- आफगानी महिलाओं का 'भय से मुक्ति' का सन्देश, सर्व वांछित, व्यक्तिगत, सामूहिक आजादी का सन्देश है|

धर्म

- एक तरफ यह सही है कि पूरी दुनिया में आतंकी एवं उसका साथ देने वाले में एक ख़ास कौम के लोग ही है, परन्तु क्या तथाकथित हिन्दुओं ने अपने गिरेवान में झांक कर देखा और उसका निवारण किया, जिसके चलते ये गुलाम हुए और एक दो दशक नहीं हजारों वर्षों तक गुलाम रहे | आज भी टीक टिका जनेऊ द्वारा अपने को विशेष वर्ग में रखते हैं |
- जो भारतीय भारत के सिलाफ "भारत तेरे दुकड़े होगें", जो सेलेब्रेटी भेद पैदा कर रहे हैं, जो कुछ तत्कालिक लाभ के लिए, जो धर्माधंता या धार्मिक उन्माद में है, जो राजनैतिक शक्ति प्राप्त करने की होड़ में है, जो शिक्षण संस्थाए,(मदरसे) समेकित शिक्षा न देकर धार्मिक कट्टरपंथी पैदा कर रहे हैं, वाम पंथ के नाम पर देश के विकाश में रौड़ें पैदा कर रहे हैं, जो विदेशी शक्तियों के खिलौने है उन्हें मजबूती से 'जगह' पर लाना होगा |
- मोदी मंत्र सबका साथ, 'सबका विकाश, सबका विश्वास' अचूक है |

समझ से परे

- एक ही ईश्वर, गॉड, अल्लाह .....है
- यही एक मात्र रचयिता है|
- फिर कोई काफिर कैसे है!
- ईश्वर से अलग इस काफिर का रचियता कौन है ?, इसकी अलग सता है ?
- क्या शैतान की भगवान से दुश्मनी / लड़ाई है, हो सकती है?

यदि हाँ

- तब भगवान एक और सर्वशक्तिमान कैसे हुये?
- भगवान जो परम दयालु है, रहीम है, करीम है तो क्या अपने प्रचार-प्रसार के लिए लोगो को क़त्ल, रेप, लूट, बर्बादी, दर्द देने की आज्ञा देता है, लगभग सभी धर्मो के लोग धर्म के नाम पर धर्मयुद्ध, जिहाद इत्यादि करते है|

कोई तो मेरे अंतरतम को सच्चाई बताये
मै तो स्वत: उसका दासानुदास हो जाऊंगा|

शैतान भगवान से बड़ा है !

- भगवान के सर्व शक्तिमान होने के बाबजूद शैतान मौजूद और मजबूत है यही सबूत काफी है|
- एक संत सवरूप जज साहब ने मुझे दृष्टि प्रदान कर दी –
- शैतान और उसका कार्य स्वाभाविक है, उसमे बल नहीं लगता है| गिरावट में, नीचे जाने में, प्रयास या बल नहीं है| आनन्द नहीं तो सुखद, अहंकार तुष्टि तो है ही|
- अच्छाई - चढ़ाई है, परेशानी है, स्वभावगत बिलकुल नहीं है|
- शैतान का, शैतानी का फैलाव, भी ज्यादा है, आसान है|
- अंधकार सर्वव्याप्त है, प्रकाश को आना/लाना/करना पड़ता है|
- अंधकार/शैतान स्वतः पुनः फ़ैल जाता है; प्रकाश नहीं|
- प्रसन्ना', एक पूर्व प्रधानमंत्री का पौत्र, अनेकों राजनैतिज्ञो के ही नहीं, स्वयं शासक वर्ग का है, सांसद है अतः उसका शैतान/हैवान होना स्वाभाविक ही है|
- कितनी ज्यादतियां की, एक लाचार व्यक्ति कितना कुछ भोगता है, शैतान कितना ऊपर उठता है, हँसता है, चिढाता है और मानवीयता/इश्वरत्व कितना नीचे चला जाता है, गुम हो जाता है- ?

Contd.

- शैतान क्या करता है- अमानुषिक, पैशाचिक, शैतानिक कार्य, पर-पीड़ा, अत्याचार, अनैतिक, दुराचार, रेप, क़त्ल, वह भी तडपा कर, एसिड में डूबा कर, टुकड़े-टुकड़े कर, पिंजरे में बंद कर, जिन्दा जलाकर, विडियो बना कर हलाक करता है –
- शैतान कितना समर्थ है – उसके सामने इंसान और भगवान कहाँ ठहरता है? अतः जज साहब का कहना कितना सही है कि इसकी तरफ झुकाब, इसकी स्वीकार्यता (acceptance) स्वाभाविक है, सामयिक है और आसान है, संक्रामक (Infection) है|
- इस स्ट्रेटजी से जीत आसान है|इसलिये शैतान जबरदस्ती का रास्ता अपनाता है,सह अस्तित्व नहीं 'Live & Let die' के आचरण,सेक्स,पैसा,रौब-दाब को अपना हथियार बनाता है,
- इसलिए शैतान सभी देश धर्म, जाति, काल से परे-सर्वोपरि है|
- सर्वजयी भी है | इसकी पूजा इसका समर्थन भी कितना आसान है, तुरंत फलदायी भी है|

शैतान होशियार भी है !

- एक राजकुमारी के वस्त्र पहनकर एक नौकरानी के राजकुमारी को उसके घर पर अधिकार, उसको अधिकार से वंचित करने की पुरानी बहुप्रचलित 'कहानी' है|
- मुझे लगता है जब परमेश्वर ने अपनी बात मानव-जाति को पहुँचाने के लिये अपना दूत भेजा उसी समय शैतान पैदा भी हुआ और देवदूत का अपहरण कर उसी के रूप में आकर हर मानव में समा गया|
- प्रसन्ना' को सजा देना देवदूत का कार्य है|
- न्यायाधीश, न्यायपालिका की गरिमा का चमकता, बिरला तो नहीं परन्तु असमान्य (uncommon) उदाहरण है जिसके आगे आदर स्वतः जनमता है; क़ानूनी रूप/प्रोटोकाल नहीं बनाना पड़ता, यह सिर्फ न्याय व्यवस्था हो, या विधायिका, या कार्यपालिका लोगों या प्रशासकों के लिए है| लाल, पीली, नीली बत्ती की जरुरत नहीं होनी चाहिये|
- लोकतंत्र कभी कभी एक ठंडी सुखद व्यार की तरह है|

असमान्य! असाधारण! अत्यंत दुर्लभ !!!

सम्प्रदाय,पंथ,धर्म:सब को अस्वीकार कर दो

- उन सबको अस्वीकार दो;
- जिन्होंने रास्ता बताने/दिखाने की भूल की है|
- क्योंकि रास्ते अलग वहीं से हुये|
- क्योंकि बंधन वहीं से शुरू हुआ|
- क्योंकि हमारा तुम्हारा भेद उसी से उत्पन्न हुआ|
- भला बताओ मेरे और तुम्हारे में क्या भेद है?
- इन लोगो के माथे कितनों का खून, कितने अत्याचार, ब्यभिचार जुड़े हुए हैं, शायद किसी भी अन्य कारक से ज्यादा|

धर्म की राजनीति

- मैं नहीं समझ पाता कि सिर्फ मुस्लिम के नाम पर सबों को अलग-थलग करना कैसे सम्भव है, क्यों APJ Kalam, वायुसेना के हमीद, आरिफ, मो० खान, अन्यान्य सबों को क्यों और कैसे नकार सकते हैं | ये तो अधिकतर हिन्दुओं से ज्यादा राष्ट्रवादी है | सेक्यूलर हिन्दू तो असली गड़बड़ है|
- सभी मुसलमान कट्टर/आतंकबादी नहीं हैं परन्तु सभी आतंकबादी और ऐसे लोग मुसलमान हैं; यह भी सही है |
- यह सरकार का काम नहीं, आवाम की जबावदेंही और काम है | परन्तु ऐसा नही होगा |
- हम यूँ ही घुट-घुट कर मरेंगे, रोज मरेंगे या एक दिन सूट/क़त्ल कर दिये जायेगें, परिवार बच्चों के साथ या उनके सामने |
- आज हर समय 1 लाख रुपये के फोन की जगह एक (अनुमति प्राप्त) शस्त्र हमेशा रखने का समय आ गया है, बालिग़/स्त्री/पुरुष सबके लिए |
- झगड़े-मौतें बेढगी, परन्तु Genocide रुकेगा |
- अमानवीय लोगों के विरुद्ध, मानवीय समुदाय के एक हुये बिना, विश्व पटल पर शांति नहीं हो सकेगी, राष्ट्रीय स्तर पर, बिना इस्त्राईल की मानसिकता, कर्मठता के सिर्फ सुझाव देने और 'मोदी मारेगा' सेना मारेगी, करने से राष्ट्रीय / व्यक्तिगत सुरक्षा नहीं होगी|

धार्मिक चेतना

- मैं किस आधार पर कहूँ की मै ही सही हूँ
- मैं तो अपने आप में संतुष्ट और खुश हूँ क्यूंकि मै सोचता हूँ जैसे भी हूँ ठीक हूँ, आच्छा हूँ, आप क्यों नही है?
- आप यदि ठीक नहीं हैं तो आपको मार कर ठीक करना मेरा काम नहीं, है ?
- भारत का भविष्य भारतीय मुसलमानों के हाथ में है|
- उस भारत का जिसमें ये मुसलमान (एक देश में दुनिया में सबसे ज्यादा आवादी) बहुत शुकून, विश्वास, अधिकारपूर्ण, लोकतांत्रिक रुप से कई विशेष सुविधाओं के साथ रहते हैं|
- ये मुसलमानों जो यहाँ की ही उपज है, बंशज और देशज है आजादी में भी सक्रिय महत्वपूर्ण भागीदारी निभायी है, एवं आगे भी निभानी होगी|
- इन्हें ही अपने बीच के अतिवादियों को नियंत्रित करना होगा / करना चाहिए, ये उनका कर्तव्य है| सिर्फ यही रास्ता है|
- इन्हें अपनी चुप्पी तोड़नी होगी|
- इन्हें याद करना होगा कि A.P.J. Kalam, 1965 युद्ध के हमीद ऐसे अनगिनत लोगों का देश है|
- इन्हें अब अपना अल्पसंख्यक (फ्री वी) तगमा फ़ेंक कर हर प्रकार से बराबरी के स्तर पर देश का विकास करना होगा – सबका साथ, सबका विकास,| विल्कुल सभी भेद भुलाकर ||
- किसी भी प्रकार की अशांति सबों पर भारी पड़ेगी | सिर्फ पश्चिमी देशों का चाहत पूरी होगी|
- जैसे अंग्रेजों के आने पर सभी मुसलमान भी तो गुलाम हो गए थे| उनका भी तो राज, इत्यादि सब चला ही गया था|

गरीबी और बेरोजगारी

- भारत में इनका निरंतर निबास समझ से परे है|
- यहाँ रोज बढ़ती आवादी के अनुपात में सड़के बनी नहीं;
- हर साल बाढ़ लाने वाली नदियों का पाट बना नहीं;बाढ़, अन्य आपदयों की मुकम्मल रोकथाम/ उपाय हुआ नहीं;
- इनके किनारे पार्क बने नहीं|
- हर खेत को पानी मिला नहीं|
- दिल्ली, मुंबई मद्रास में भी बाढ़ रोकने के उपाय हुए नहीं|
- उच्च स्तरीय शिक्षा, स्वास्थ्य, भोजन सबको मिला नहीं|
- हर जगह, हर कार्य के लिए उर्जा/बिजली उपलब्ध हुआ नहीं|
- पर्यटन विकसित हुआ नहीं,
- औधोगीकरण हुआ नहीं : जीवन स्तर विकसित देशों के बराबर हुआ नहीं|
- यहाँ तो काम ही काम है करने को, फिर बेरोजगारी कैसी ?

गरीबी

- फिर भी काफी सड़के है; बिजली भी है |
- तरह-तरह के कौशल विकाश की शिक्षा है |
- (जिसके पास भी दो पैसे हैं वह उनसे कुछ कराकर उसे बढ़ाना चाहता है | सक्रियता चाहता है |)
- दूसरे देश में रहने वाले एक अभियंता ने मुझे बताया |
- "गरीब /बेरोजगार सिर्फ वही है जो कामचोर या वेईमान हैं" |

गरीबी

- कारण कुछ और भी है –
- लोगों को काम नहीं
- 'ना-करी' चाहिए | - 'बिना काम के वेतन चाहिए |
- हमें वोट दे दो, हम दस लाख नौकरी देगें |
- गैर सरकारी कार्य नियोजन/रोजगार थोड़े है |
- "हम मनरेगा",पेंशन और तरह-तरह के बिना काम के पैसे देगें | घर बना देंगे, बिजली मुफ्त देंगे , औरत होने का भत्ता देंगे, किराया नहीं लेंगे |
- "हम तुम्हारे कर्जे माफ कर देगें कोई काम मत हो कोई घुसखोरी नहीं होगी सीधे खाते में जाएगा |
- बेरोजगारी भत्ता भी देंगे; फिर बेरोजगार ही क्यों न रहा जाय !
- तुम्हारी फैक्टरी बंद हो गयी तुम्हे 'प्रोत्साहन' देगें |
- सरकारी, गैर सरकारी उपक्रम तुम्हारी बेईमानी और कामचोरी से बंद हो गए, न इनकी जांच करेगे, न कमियों की पहचान करेगें, न दोषारोपण करेगें |

गरीबी

- तुम्हारा वेतन भत्ता कम है, जो करते हो उसे भी बंद कर दो, हड़ताल कर दो बढ़ा देगें |
- न्यूनतम काम के बिना न्यूनतम मजदूरी (अच्छी भली) दे देगें |
- जो कुछ लोग काम करना चाहते है वह भी वंद कर दो; देगा कैसे नहीं ? वोट लेना है की नहीं !
- रोजगार तुम्हारा जनतंत्र सिद्ध अधिकार जो है, संसार में आपके जीवन का भार काम करने वाले, टैक्स भरने वाले क्यों नहीं उठायेगे भला |
- एक किसान आन्दोलन हुआ था |
- एक ही राज्य के लोग,
- एक ही तरह के लोग,
- दिल्ली से सटे लोग,
- काफी संख्या में लोग

द्वेषपूर्ण, विपक्ष,

- अवांछनीय तत्वों का हस्तक्षेप, फिर भी सरकार को चुकाना पड़ा, झुकना पड़ा वोट तो लेना था न !

'सनातन पूजा .....

- पूजा के नाम पर कुल मिलाकर देश कम से कम 2 माह बंद रहता है|
- देश के लिये यह प्रतिगामी है|
- जो समय में ठहरता है वह ठहरा हुआ नहीं पीछे चला गया होता है| अत्यंत अवांछनीय है|
- सभी शिक्षण संस्थाऐ बन्द, न्यायालय बन्द,कार्यालय बन्द, शायद कारखाने छोटे प्रतिष्ठान सभी बन्द केवल पापी पुलिस, प्रशासन और सरकारी अस्पताल, बन्द नहीं|
- संस्थाओं / कार्यालयों में इतनी छुट्टीयों का कारण / आवश्यकता ?
- व्यक्तिगत छुट्टीयों की आवश्यकता मानव मन/तन के लिये हो सकती है उसका भी नियंत्रण जरूरी है|
- शायद 7-10 दिन में एक दिन जरुरी है | मुझे नहीं लगता बहुत से प्रगतिशील लोग कभी इतनी भी छुट्टी मनाते है| मैं जापान की बात नहीं करता|
- व्यक्तिगत छुट्टियाँ आवश्यकता आधारित बनाते हुये भी संस्थाओं को हर दिन सालों भर चलना चाहिये|

आलस्य और प्रमाद, स्वीकार्य नहीं है|

डेमोग्राफिक संकट : उपाय

- डेमोग्राफिक संकट आसन्न है | संकट बड़ा है, सबों के लिये|
- इसके प्रति सजगता, संवेदनशीलता के बाद कई उपाय समयनुसार हो सकते थे/हैं| जैसे

हम दो हमारे दो :-

- सबों के लिये लागू करना- जैसे चीन में किया गया | पक्षपात रहित सम्यक कठोर नियम एवं कार्यान्वयन !
- प्रोत्साहन/दण्डात्मक उपाय (carrot & stick)
- ज्यादा बच्चें सार्वजानिक सुविधाओं से वंचित होना|
- कम बच्चे वालों को सामाजिक सुरक्षा, सहायता, शिक्षा स्वास्थ्य रोजगार में प्राथमिकता देना इत्यादि|
- **इसका विरोध एक साजिश है|**
- अब तक इसको नहीं करना राजनैतिक अवसरवादिता है| जो देश समाज पर बहुत भारी सिद्ध हुआ है|

Contd.

- राजनैतिक स्थिरता के लिये/लोकतांत्रिक व्यवस्था में मतपत्रों की स्थिरता सुनिश्चित की जानी चाहिये |
- उपाय बहुत स्पष्ट नहीं है |सोचा जाना चाहिये | यदि 'धन' के उत्तराधिकार का एक नियम हो सकता है तो मतपत्रों के उत्तराधिकार का क्यों नहीं |
- एक सर्वे के तहत एक व्यक्ति और उसके भविष्य के वंशजों/उत्तराधिकारीयों का मत पत्र स्थिर/सुनिश्चित किया जा सकता है | जैसे आज मेरे परिवार में पत्नी और अवयस्क बच्चों को मिलाकर दो मतपत्र है, तो भविष्य में ये दो ही रहेंगे | बच्चों की शादी और उनके बच्चों के व्यस्क होने के बाद भी | जो भी आज व्यस्क है वो सभी एक इकाई है और उनका एक मतपत्र है |

आज यह सुनिश्चित करना कल का सुखद सुनिश्चित उपाय है |

सोच से परे

- कुछ लोग पैंट कमीज पहनते है, कोई धोती कुर्ता, कोई सफ़ेद या चेक की लुंगी, और भी भिन्न- भिन्न तरह के जैसे जापान, चीन; आदिवासी कबीले इत्यादि|
- भोजन की विविधता देश-विदेश ही नहीं परिवार के सदस्यों के बीच भी है | गाय बहुत लोग, बहुत देशों और धर्मो के लोग खाते हैं परन्तु भारत में गाय खाने वाले पर कुछ लोग कुपित रहते हैं|
- कोई हजामत बनाते कोई विभिन्न केश शैली अपनाते हैं, दाढियों के बारे में भी वैसा ही है इसका स्टाइल हर साल बदलता रहता है | परन्तु कुछ दाढियां चिन्हित और सूचक हो जाती है जैसे सिखों की, मौलाना की, साधुओं की, फ्रेंच कट|
- कोई टोपी लगाते है, कोई जालीदार, कोई हैट, कोई पगड़ी, मंदिर का गुंबज या चोटी एक तरह का, मस्जिद और गुरुद्वारा का थोड़ा अलग-अलग, गिरिजाघर का अलग; आवासीय घरों की तरह|
- कोई कृष्ण के बाल रूप को, कोई उनके विश्वव्यापी रूप को, कोई राधा-रानी के साथ, कोई रास लीला का, कोई शंकर को, कोई राम को, कोई हनुमान को, कोई रसूल को, कोई यीशु को, इसमें क्या फर्क पड़ता है|

Contd.

- सभी अपने वालों से प्यार/पूजा इत्यादि भाव रखते हैं, कुर्बान होते है कुर्बानी देते है- धन का या मन का|
- परन्तु इसको लेकर लोग लड़ते क्यों है | मार-काट दंगे क्यों करते हैं- धर्मान्तरण करने का षड़यंत्र क्यों करते है|
- मुठ्ठी भर हिन्दू किसका-किसका पेट भरेंगे ? इस्लाम का, इसाई धर्म का? बौद्ध धर्म का? इसके समाप्त हो जाने के बाद ?
- कभी मिशन था, धंधा हो गया है|
- इसका कारण और निवारण दोनों समझ से परे है|
- दोष का निराकरण या दोषी को ही निपटाना ?
- सनातन विचारों को विश्वधरोहर के रूप में, मानवता को जिन्दा रखने के लिये सहेजने, सुरक्षित रखने की जरुरत है|

चुनावी नौकरियाँ

-: बाबा बिहारी,(भास्कर) से :-

- "सरकारी नौकरी पर आधारित अर्थव्यवस्था न कभी चली है न चलेगी। पीछे छूट गई अर्थव्यवस्था ही बिहार की प्राथमिकता होनी चाहिए। उसके लिए जरूरी है अतिरिक्त निवेश की । बाहर से धन आए। लक्ष्मी घर, दरिद्र बाहर। अगर सरकार अपने खजाने से तनख्वाह देगी, फिर उसी पर 'कर' लेगी। उसके खर्च होने पर भी 'कर' लेगी, फिर वापस उस उगाही से तनख्वाह देगी, तो अर्थव्यवस्था का शरीर स्वयं के अंगों को खाकर जिंदा रहने जैसा होगा। किसी की सरकार बने, कोई बने मुखिया, आपको फर्क तब ही पड़ेगा जब निवेश का नया चक्र बनेगा। किसी को रिस्क उठाना पड़ेगा।

एकदम सच –

राजद- हर घर में सरकारी नौकरी

बीजेपी+जदयू- 1 करोड़ को सरकारी नौकरी

यह सरकारी नौकरी किसके बूते पर-"

बाबा बिहारी की बात बिलकुल सही है –

- प्राकृतिक रूप से पैदा इंसानों को हाथ, पैर एवं अन्य इंद्रिय संसाधन/इंस्ट्रूमेंट के रूप में पहले से प्राप्त है | सरकारी 'ना'करी ही चाहिये, दरअसल पैसा चाहिये, 'ना'करी करके ! कहाँ से ! –
- बिना उत्पादन कहाँ से ? मतपत्र खरीदने, धोखाधड़ी की ये घोषणाए 'लोकतंत्र' के लिये खतरा है – किसे परवाह है |

चुनाव : लोकतंत्र का महापर्व ?

या

लोकतंत्र का छलावा ?

- उन्हीं 'शासितों' ने उन्हीं 'शासकों को' 'मत'-दान (अधिकार दान/ अपना स्वत्वदान) कर दिया | अब उनकी ही ओर ताकते रहेंगे|
- बेहतर तंत्र की खोज आवश्यक है|
  - कुछ खरीदे गये, कुछ वोगस, कुछ भ्रमित मत|
  - हीरा और खीरा बराबर|
  - राजा और रंक बराबर
  - पढ़ा बेपढ़ा बराबर|
  - 60% वोटिंग रिकार्ड ;बाकि ? यदि वोटर लिस्ट/ मतदाता सूचि पुर्णतः सही था,तो बाकि 40% का मत?
  - एक बूथ पर औसतन 25 से ज्यादा सरकारी अधिकारी/ पुलिश/ कार्यकर्ता, कितना खर्च, किसका खर्च|

Contd.

- आज के युग में सुरक्षित निश्चित OTP या QR Code के द्वारा मतदान क्यों नहीं ? 40% नहीं मतदान करने वालों की संख्या घटकर बहुत कम हो जायेगी, जो जहाँ से चाहेगा वोटिंग कर देगा|
- जीतने के बाद पुनः नये-नये टैक्स लगाकर- कुछ नौकरियाँ देंगें, फिर वादा किये गये आत्मघाती राष्ट्रघाती, समाजघाती, चरित्रघाती 'फ्रीबीज' को दायें- बायें करेंगे, घोटाले करेंगें, फिर अगली बार यही दुश्चक्र चलेगा|
- मतदान के इस भंवर से, मायाजाल से मुक्त होकर ही सही तंत्र का निर्माण हो सकता है|

फेमिनिज्म

- कुछ दिन पूर्व 'तलाश' ने अपने 'संवाद' कार्यक्रम में 'बेटा भी बचाओं' कार्यक्रम में युवाओं की रायसुमारी की थी|
- एक लड़के का यह कहना कि "जैसे हमारी दो टांगे है वैसे ही परिवार और समाज की दो टांगे है स्त्री और पुरुष |" कोई भी टांग छोटा हो या बड़ा हो लंगड़ापन तो होगा|
- एक को बढ़ाकर या दूसरे को घटाकर या अनावश्यक प्रतिकूल प्रतिस्थापन से सही ढंग से न व्यक्ति, न परिवार, न समाज, न देश चला सकता है|
- परन्तु 'वोट' के लिए, अग्रणी विचारक, लेखक चिन्तक बनने के चक्कर में लोग भयानक भूल कर रहे हैं|

अंतर

- एक फौजी (कुछ ही और लोग) अपने बतन के लिए (अपने कर्तव्य के लिए) कड़ाके की सर्दी, रेगिस्तान की गर्मी, जंगल, पहाड़, आतंकियों का डर गोली, दुश्मन सेना की बमबारी सहता है|
- दूसरा व्यक्ति सत्ता में रहने के लिए
- विदेशियों से षड़यंत्र करता है|
- धर्म के नाम पर आंतक करता है|
- कुछ आतंकियों और बर्बर लोगों को सह देता है, मदद करते हैं|
- कुछ व्यक्ति ऐसे देश द्रोहियों का अनुगमन करता है|
- देश के अंदर षडयंत्र करते हैं|
- यह दूसरा ग्रुप अपने कारनामों से सेना, कार्यपालिका, न्यायपालिका का भी मालिक बन बैठता है|
- ऐसा क्यों होता है ?
- एक तीसरा ग्रुप है जो सब समझता है परन्तु अपने बातानुकूलित घर से बाहर नहीं निकलता है|

Contd.

- "जो होगा देखा जाएगा"
- एक चौथा ग्रुप भी है|
- "कोई नृप हों हीं हमें का हानि!
- ऐसा कबतक चलेगा इसको, कौन बदलेगा?
- पहली श्रेणी को लोग सिर्फ बलिदान देगें या कभी कमान भी लेगें?
- यह कैसी सामाजिक/संवैधानिक व्यवस्था है | नेता, सर्वोच्च शासक बनने, कुछ मत पत्रों को विभिन्न घटक हथकंडों के जरिये वंशावली के चलते एक 'शासक वर्ग कैसे तैयार हो गया है|
- एक शासक वर्ग तैयार होना संवैधानिक/न्यायायिक विफलता है|
- यह 'समान अवसर' तो नहीं है, न समान जिम्मेवारी है|

दोष : दोषी

- मुझे शुरू से लगता है कि भारतीय संसद सिर्फ हिन्दुओं पर कानून बनाती है उनकी पारिवारिक मान्यताओं को भी खंडित करती है |
- ऐसे संसद की भी निंदा होनी चाहिए | एक सार्वभौमिक कानून/तरीका अपनाया जाना चाहिए/ धर्मस्थल हो, शिक्षा हो, व्यवहार न्यायालय हो...|
- ईरान में 'मोसादेत' की घटना से हमारी वर्त्तमान एवं आगामी राजनैतिक परिदृश्य स्पष्ट है |
- असली दोषी सुविधाभोगी बुद्धजीवी वर्ग, पत्रकार, लेखक, मिडिया ऐंकर, कुछ धार्मिक नेता, बिकाउ जन प्रतिनिधि, अपने एवं अपने देश की बजूद से खिलवाड़ कर शासन की ईच्छा वाले राजनेता हैं |ये सभी संविधान की दुहाई देते हैं|
- संविधान बचने की जबाबदेही यदि मध्यम, बुद्धिजीवी वर्ग नहीं लेगा, सीधा प्रहार या मत प्रहार नहीं करेगा तो देश, हम और वह भी नहीं बचेगा|

हम : आसन्न संकट

संकट बहुत विकट है|

- सामाजिक – 'परिवार' नामक अतिंम संस्था, का कानूनी, आर्थिक और भावनात्मक विघटन|
- राजनैतिक – शासन में बने रहने के लिए देश को खण्डित करने, बेचने के साथ ही अपने को भी बेच देने, वाले हमारे अधिकांश जन प्रतिनिधि|
- धार्मिक - सबसे मानवीय गुणों वाले, सबसे सहिष्णु, 'जिओ और जीने दो', स्वांतः 'सुखाय परिजन हितायच', बसुधैव कुटुम्बकम की मान्यता वाले समूह को ही असहिष्णु बताकर चौतरफा हमला, इसको समाप्त करने की विभिन्न मुहिम जैसे धर्मान्तरण, घुसपैठ, population ratio उलटना, मतदान के हथकण्डे इत्यादि|
- आदर्श – पैसा/ भौतिक उपलब्धि ही सफलता का मानदण्ड एवं लक्ष्य; और हमारा आदर्श जो हम अगली पीढ़ी को दे रहे हैं| हमें पशुओं से बदत्तर बना रहा है|
- ग्लोवल - मनुष्यों को किस किस प्रकार से समाप्त किया जा सकता है, कोरोना वायरस, fission बम या fusion बम, रासायनिक या भौतिक हथियारों से, इसी पर सबसे ज्यादा जोर है|

भारत Vs पश्चिमी षड़यंत्र ?

- बिन लादेन को पाकिस्तान में घुसकर मारा, लाया, समुद्र में मछलियों को खिलाया|

  किसी की सम्प्रभुता पर कोई आँच नहीं आई|
- सुलेमान को इरान में मारा- पुनः किसी की सम्प्रभुता का हनन नहीं हुआ|
- इजरायल ने कई देशों में घुसकर हमास/हिजबुल्ला का सफाया किया, कर रहा है, करेगा उसे अपनी सुरक्षा का अधिकार है|
- भारत 'यदि' कनाडा में किसी को कुछ करता है तो उस देश की (कनाडा की) सम्प्रभुता खतरे में पड़ती है|
- कनाडा यदि खालिस्तानियाँ को प्रश्रय देकर, बढ़ावा देकर, एयर इण्डिया को बम से ब्लास्ट करवाता है, खालिस्तान बनाकर भारत को खण्डित करने का सीधा प्रयास करता है तो भारत की सम्प्रभुता का कोई मामला नहीं बनता|
- भारत को अपनी सुरक्षा का कोई कारण नहीं बनता|
- कमजोर भारत सुबूत मांगता है, कहने की हिमत नहीं कि भारत का दुश्मन सात-पाताल में भी होगा तो भारत मारेगा | बेचारा भारत ! नपुं.... भारत !! अन्दर से खण्डित भारत !!!

बेचारा भारत

- बंगलादेश में हिन्दुओं पर जो अत्याचार हुआ, सत्ता को जो उलटा गया (सत्ता लोकतात्रिक नहीं थी, अब लोकतात्रिक हो गया है?) उसमें न सम्प्रभुता का हनन हुआ, न मानवाधिकार का|
- मानवाधिकार (वादी) के मुंह में क्या ठुंसा हुआ है|
- ये सब सिर्फ कमजोरों के लिए है|
- जैसे भारत का संविधान और कानून सिर्फ यहां के कमजोरों के लिए है|
- कश्मीर में genocide करने वाले अभी भी हुकुमत में है, जबकि इन पर genocide का मुक़दमा खुले कोर्ट में होना चाहिए था| - खुल्लखुल्ला देश द्रोह की बाते करने वाले और महत्वपूर्ण हो जाते है; मिडिया में जाते हैं | मिडिया का TRP बढ़ता है, देश, विदेश से पैसे भी मिलते है|
- कुछ मिडिया, कुछ स्तम्भकार, लिखने वाले पत्रकार हैं, फिल्मकार है जो इस देश की जनता, सरकार, संविधान से ऊपर हैं|

तलाश : शांति

विश्व में शांतिपूर्ण देश ?

- कुछ छोटे देशों एक भाषा, एक धर्म सस्कृति वाले शांतिपूर्ण लगते है|
- छोटे देशों में भी ब्रिटेन फ्रांस, जर्मनी, लेबनान, यमन, स्लोवाकिया etc.; जहाँ भी एक से ज्यादा ethnic लोग हैं या आतंरिक दखल/घुसपैठ के शिकार है, अशांत हैं|
- भारत के तीन टुकड़े हुए, रुस के 17, चीन में शांति तो है डेमोक्रेसी नहीं, फिर भी श्यानमेन चौक की घटना हुई 10000 से ज्यदा छात्रों की मौत हुई थी|
- अमेरिका – अशांति तो है 'black life matter' का नारा तो है|सम्पन्नता और बल पर शांति है ?
- कनाडा ट्रडो भारी भ्रम में है; खालीस्तान भारत में बना रहे हैं, मुझे उमीद है और मेरी सलाह भी है खालिस्तान कनाडा में बने; बनकर रहेगा|बन ही जाना चाहिए|

Contd.

- एक समुदाय में भी कालांतर में मतातंर होकर विभाजन; फिर लड़ाई एवं अशांति हो ही जाती है |
- शिया/सुन्नी/बहाई/हीनयान/महायान/दिगम्बर/श्वेताम्बर, कैथोलिक/प्रोस्देंट, अकाली/निरंकारी इत्यादि |
- सनातन जैसे शांति, दया करुणा, परोपकार के जीवन शैली वालों के मंत्रो के बाद लगभग हमेशा ही अंत ॐ शांति, शांति शांति से होता है |
- मेरी समझ में नहीं आता था कि हमेशा इस उद्घोषणा की क्या जरुरत है – अब समझ में आ रहा है, कि दीर्घ शांति की सम्भावना ही नहीं है |

लड़ाई जैविक नियम है |

बंग्ला देश : राष्ट्रीय सुरक्षा

- पड़ोसी प्रथम/सबसे ऊपर की पालिशी ध्वस्त हो चुकी है|
- राष्ट्र को बेच कर सत्ता का लोभ, नंगा स्वार्थ, 'जिओ उन्हें मरने दो' का सिद्धांत ही जीत जाता है|
- आपके असली दुश्मन आपकी प्रगति स्वाबंलम्बन, स्वतंत्रता/संप्रभुता है | इसमें थोड़ी भी कामयाबी मिली और सभी लोग (सबसे पहले, सबसे करीबी) आपके दुश्मन हुए|
- भारत ने बंग्लादेश की (बंग्ला) अस्मिता बचायी, बहुत मूल्य देकर स्वतंत्र कराया, प्रगति में सहभागी बना, आज वहाँ भारत के विरुद्ध ताण्डव हो रहा है चाहे जो भी वस्तिविक जिम्मेदार हों|

अन्तराष्ट्रीय राजनीति खुंखार भेड़ियों की राजनीति है |

- बंग्लादेश बहुत महत्वपूर्ण है |
- यहाँ की हिन्दू आवादी और शेख मुजीबुर्रहमान के लोग ही असली बंग्लादेशी है | इनका विनाश भारत के हित में नहीं है |
- इनकी सुरक्षा स्वयं भारत के हित में है |
- भारत को सभी आवश्यक कदम उठाना ही चाहिए, चाहे सैनिक कारर्वाई ही क्यों न हो | यह दुसरे को भी सन्देश देगा कि भारत के पड़ोसियों को कठपुतली बनाने में कठिनाई है |
- उक्रेन में रूस ने हस्तक्षेप स्वयं की सुरक्षा के लिए ही किया |

बांग्लादेश : हम !

- बांग्लादेश में शांति एवं न्याय स्थापित करना आवश्यक है|
- यह प्रयास खुद भारत के लिए होगा|
- शांति दूत बनने इजरायल/हमास, युक्रेन/रूस में शांति की तमन्ना और कोशिशें प्रतिकूल कदम हैं|
- इजरायल ने अपने बजूद बचाने के लिए रूस ने अपनी सुरक्षा अक्षुण रखने के लिए युद्ध शुरू किया|
- यह भी सुनिश्चित है कि युद्ध का निपटारा जल्दी नहीं होगा | वैसा ही होगा जैसा इजरायल या युक्रेन में हो रहा है|
- इसका मूल्य भी बहुत अधिक होगा|
- परन्तु राष्ट्र के वजूद के लिए इसमें आसन्न उथल पुथल के मदेंजर यह आवश्यक है, संकटकालीन उपाय है|
- युद्ध रत होने के कारण ही बहुत सारी समस्याएं ठीक रहेगी|

लोकतंत्र : कोई भी तंत्र

- आपसी फुट स्वेच्छाचारी राजाओं और जातिवाद के कारण मुगलों के आने से पहले भी भारत के जन-सामान्य की दुर्दशा थी
- जयचन्द के कारण मुगलों ने आकर जो तबाही मचाई; कल्पना मात्र से झुरझुरी भर जाती है|
- धर्म के नाम पर व्यक्ति की कीमत जानवरों से कम थी, जानवरों की हत्या बेमतलब तो नहीं होती; न उनको बलात्कार, अंगभंग, पिटाई भोगना पड़ता है|
- अग्रेजों के आगमन में 'मीर कासिम' थे|
- आज तो मीर कासिम और जयचंद ही बहुसंख्यक हैं, कहीं सत्ता में भी हैं और आते रहते है|
- लगता है, यह तो हमारा संस्कार-स्वभाव हो गया हैं|
- सभी को स्वयं की फिक्र में देश /समाज की बलि देने में अपार वौद्धिकता, बुद्धिमता, नजर आती है|

शिकार और शिकारी

- अनगिनत तरीके हैं, लेकिन सबसे ताजा जेलेस्की एक नौटंकी बाज को देश प्रमुख बनाकर हवा देना, लड़ाई में उसके देश एवं जन सामान्य की कुटाई करना, विस्थापित कराना|
- वाह वाह के साथ हथियारों की सप्लाई देना (बिना नगद के?) फिर सुलह कराना और फिर दिवालिये देश की खनिज सम्पदा इत्यादि ले लेना | देश का भविष्य भी लूट लेना|
- एक मूर्ख शासक देश का भविष्य किस प्रकार वर्वाद करता है,
- उससे मूर्ख जन सामान्य है जो अभी भी उसे उतार नहीं फेकता|
- हिन्दुस्तान में भी ऐसा होता रहा है, आगे भी सम्भावना बनती है|
- कई 'जेलेंस्की' लाईन में लगे हैं|
- अमेरिका जैसे कई देश अवसर की तलाश में है -

अन्यान्य

डायनोसार क्यों लुप्त हुये

- यह Geneticaly coded (अनुवाशिक रूप से सुनिश्चित) है कि जन्म होगा तो मृत्यु होगी, एक खास समय के बाद कोशिकायें स्वतः नष्ट होने, बुढ़ापा होने फिर मर जाने की सभी प्रक्रियायें जन्म के साथ ही सभी (जीवों) में सन्निहित है|
- इसी प्रकार प्रकृति में विकसित जीव जगत के किसी भी प्राणी-वर्ग का समापन भी उसकी प्रकृति में सन्निहित है| अन्यथा कोई species इस पृथ्वी या ब्रह्माण्ड में हमेशा के लिए स्थापित हो जायेगा/हो जाता तो ?
- इससे परिवर्तन/विकास रुक जायेगा, जो संभव नहीं है,इतिहास नहीं है, उदाहरण नहीं है; होता तो हम आज नहीं होते|
- आदमी जितना धन,शक्ति,बुद्धि आदमी को मारने के तरीको की खोज और क्रियान्वयन में लगाता है, जितना बड़ा व्यापार यह है उतना दूसरा नहीं| क्यों?
- युद्ध होना ,परमाणु युद्ध होना,
- पर्यावरण दूषित होना,
- अनियंत्रित कृत्रिम बुद्धिमता (A.I) का विकास इसी सत्य के कारक है|
- यह विकास ! मनुष्य के खात्मे के लिये अन्तनिर्हित है|

सिर्फ 'मैं' !

लोकतंत्र में भाषाई – दूरदृष्टि ?

- मुझे सपरिवार शिर्डी सांई के पास जाने की प्रवल इच्छा हुई | मालूम हुआ कि महाराष्ट्र में मराठी नहीं जानने वाले का प्रवेश बंद, कहीं स्टेशन या अन्य जगह पर हिंदी बोल दिया तो -? पिटाई की काफी सम्भावना है | अतः अपने आराध्य से भी मिलना स्थगित कर दिया | परिवार के सुरक्षा का प्रश्न भाषा से ऊपर समझ में आया आराध्य से भी ऊपर !
- महाराष्ट्रियों को वित्तीय लाभ हुआ (?) और उनके प्रति श्रद्धा ऊपर से ? क्योंकि इन्होने देश को बांटने और संविधान की मूल भावना " किसी भी नागरिक को देश के किसी भी कोने जाने और रोजगार का मौलिक आधिकार है;" के ऊपर अपने क्षेत्र के लोगों का कल्याण किया | देश के दूसरे हिस्सों में उनके विरुद्ध लोग खड़े नहीं हो सकते हैं क्या ?"
- क्या लगता है इनके इस बर्ताव से थोड़े ही दिनों में तमिल नाडू समेत पूरा भारत मराठी भाषी हो जाएगा |

भाषा विवाद – बदमाशी

- जब भी उत्तर भारत के लोग घूमने जाना चाहते है पहली पसंद दक्षिण भारत विशेषकर चेन्नई, केरल होता है | वालाजी, मदुरै, तिरुअनंतपुरम अन्य मंदिर आकर्षित करते हैं|
- सनातन का बड़ा जोर है उत्तर भारत में; परन्तु सबसे ज्यादा यह संस्कृति सुरक्षित है दक्षिण में, कल ही एक रीढ़ के मरीज को कोंम्बटूर भेजा और एक मेरे सम्बधि जिन्हे शंकर नेत्रालय जाना था, ने अपना कार्यक्रम बदल दिया – डर है उधर कठिनाई होगी, पिटाई भी हो सकती है|
- चेन्नई के एक कान्फ्रेंस में मेरे उन बधुओं ने दक्षिण भारत को भारत की स्वास्थ्य राजधानी के रूप में स्थापित करने की कोशिश की परन्तु वे तो लोगों में डर पैदा कर रहे है|
- सामान्य से नीचे शिक्षा और पैसा दोनों तरह के लोग इस भाषा विवाद के चलते उधर का रुख करने से परहेज कर रहे हैं|
- इन्हें क्या लगता है, घूमने, या चिकित्सा की आवश्यकता के लिए उधर जाने की इच्छा रखने वाले लोग पहले तमिल/मराठी सीखेंगे, उसमें पारंगत होने के बाद ही जायेगें|

कुछ बातें और भी.....

- ध्यान देने पर दक्षिण के अधिकांश वैज्ञानिक, ISRO एवं अन्य संस्थानों, जैसे मा० ए० पी० जे० कलाम हों, या सोमनाथ हों, एक अच्छा प्रभाव एक अपनापन पनपता है; लगा उनका बर्चस्व पूरे देश पर बढ़ रहा है, बढ़ना चाहियें|
- हम गलत है न? भाषाई विवाद सही है|
- एक तीसरी स्थिति भी है –
- पढाई तो मातृभाषा में ही होनी चाहिए, मेरी प्रबल धारणा है|
- मुझे अक्सर लगता है हम आज भी अंग्रेजों की गुलामी झेल रहे हैं | उसका बहुत मूल्य चुका रहे हैं – भाषाई गुलामी है जो हमें मानसिक रूप से कमतर बनाता है (?)

भाषा और हमारे बच्चे ---

1. एक शब्द 'गाय' से परचित होता है|
2. फिर यह भी जानना होता है कि इसे cow कहते हैं,
3. उसे यह भी जानना होता है कि गाय शब्द को अंग्रेजी में cow कहते हैं|

- एक की जगह तीन जानकारी रखनी पड़ती है | एक मानसिक बोझ !
- जबकि अंग्रेजों को एक ही जानकारी cow रखनी पड़ती है|
- ऐसा ही अन्य भाषाई लोगों के साथ भी है|

परन्तु

- अपने सिमित दायरे से निकलते ही अपने देश में ही सुप्रीम कोर्ट हो, या कुछ और, विज्ञान के बिषय हों, या उच्चतर शिक्षा, अंग्रेजी बीच में आ जाती है|
- कुछ दिन बिना अनिवार्य अंग्रेजी के लोग बोर्ड परीक्षा पास करने लगे वे वहीँ तक रह गए|
- देश से बाहर कही भी निकलें जापान हो, या चीन, यूरोप हो, या अफ्रिका हो या आस्ट्रेलिया अंततः अंग्रेजी ही काम आता है|

Contd.

- यह मज़बूरी भी है, और जरुरी भी, वांछनीय भी|
- दक्षिण के बच्चों को हिंदी से दूर ही रखा जाय तो अच्छा है– परन्तु उत्तर, पश्चिम पूरब में दक्षिण में भी केरल और आंध्र इत्यादि में उनका बहुत स्वागत होगा मुझे नहीं लगता है, और लोग हिंदी,मलयालम,कन्नड़ इत्यादि की जगह तमिल पढ़ने-बोलने लगेगें ऐसे भी नहीं लगता है|
- जब पूरे विश्व की संचार भाषा, विज्ञान की भाषा के रूप में अंग्रेजी ही है तो देश में हिंदी सामान्य संचार भाषा के रूप में सबसे ज्यादा स्वीकार्य लगती है|
- इसके विरुद्ध मतपत्रों की राजनीति कर लोग अपने लोगों का आहित ही कर रहे हैं;

मत-पत्र देश को कितने घाव देगा |

- व्यक्ति, लोगों, समाज, देश, विश्व, पर्यावरण इत्यादि का भयानक अहित इसी कारण होता है |
- इस पथ से अलग होते ही सारी गड़बड़ियां शुरू होती हैं| हजारों उदाहरण है | सबसे ताजा वक्फ बोर्ड पर घमासान,
- लोग बिना पूर्ण रूप से जाने ही कह रहे है, सुन रहे है, फौलो कर रहे हैं या फिर अंदर से खौल रहे हैं; (मैं भी इसी में हूँ) – फिर भी कुछ बातें समझ में नहीं आती :

1. कोई बात न्यायालय की परीधि से बाहर कैसे हो सकती है |
2. कोई जमीनी कब्जा किस भी व्यक्ति, संस्था के कहने मात्र से कैसे वैधानिक हो सकता है ?

- अनेक नेताओं (मुस्लिम और हिन्दू दोनों) धार्मिक/ राजनितिक सभी इन मूल-भूत बातो को कैसे नजर अंदाज कर सकते है – देश द्रोह, समाज द्रोह की हद तक कर रहे हैं, क्योंकि सता और व्यक्तिगत लाभ के आगे किसी प्रकार की इमानदारी टिक ही नहीं सकती है, सोच की इमानदारी कितनी आवश्यक है और सोच की बेईमानी कितना घातक- जान, माल, विकाश की कितनी क्षति, जबकि सोच की इमानदारी में लगता कुछ नहीं है, बन सबकुछ जाता है |

आपरेशन सिंदूर

- (पाकिस्तानी/धार्मिक आक्रमता सिर्फ बढ़ती जायेगी, बालाकोट हुआ फिर भी आक्रमण हुआ |)
- (सहिष्णुता सिर्फ वेवासी लाचारी में बदल जायेगी, अपनी सुरक्षा की सुगबुगाहट भी बंद हो जायेगी |)
- युद्ध के बिना निर्माण नहीं होता |
- जापान या जर्मनी' इसके आधुनिक उत्थान की नीब युद्ध में निहित था
- गृह युद्ध से सिर्फ एक ख़ास वर्ग को क्यों डरना है – गृह युद्ध रोकने का अर्थ है आसन्न Genocide को त्वरित करना |
- गृह युद्ध का मतलब है जीवित रहना – एक जुट होना, जाती, भाषा धर्म इत्यादि विभाजक रेखाओं को मिटाना |
- खो जाने की सम्भावना दोनों स्थिति में है निष्क्रिय रहने में ज्यादा |
- अर्थ से ज्यादा जरुरी है आत्मविश्वास और स्वाभिमान|
- यदि ये जिन्दा रहे तो economy (अर्थ) तो स्वंय आ जाएगा |
- यदि यही नही रहे तो देश और संस्कृति कैसे जिन्दा रहेगी |
- देशद्रोहियों के खिलाफ आतंरिक युद्ध वाह्य युद्ध से बहुत ज्यादा जरुरी है | इससे अच्छा तो तानाशाही है |

मत पत्र में लोकतंत्र कैद है !

- गुलाम है हम सब भी, उसके साथ विवश हैं|
- एक तानाशाह नपुंसक लोकतंत्र से बहुत अच्छा है|
- स्यलिन ने रूस का क्या बिगाड़ा, हिटलर ने जर्मनी का क्या बिगाड़ा एक राष्ट्रीय चेतना/स्वाभिमान दिया जो आवश्यक है; विकास के लिए, स्वाभिमान के लिए, मानव के रूप में जीने के लिए, अन्यथा इसमें क्या रखा है|
- आया, और २६ व्यक्ति को; परिवार और सबके सामने भुन कर चला गया|
- एक दर्जी को उसके घर में काटा गया video बनाते हुए|
- एक व्यक्ति को घेर कर काट दिया|
- पांच सैनिकों के सिर उच्छेद कर उसे सीमा के अन्दर भेज दिया|
- बम्बई में आकर सैकड़ों को मार दिया|
- दुनियाँ को,हिन्दुस्तान, पुलगाम आक्रमण से कुछ लेना देना नहीं है|
- युद्ध की विभिषका वियतनाम हो आफगिस्तान बहुत दर्दनाक है|
- असह्नीय है परन्तु घर में काटे जाने से, Genocide किये जाने से अच्छा है|
- पहलगाम को धर्म से ज्यादा लेना देना नहीं है | देश की लड़ाई है इसमें धर्म हथियार है||

लड़ाई आवश्यक है |

पसमंदा

- जातीय जनगणना से पहली बार मुझे पसमंदा समाज की बिशाल जनसंख्या की जानकारी मिली और उनके सामाजिक स्थिति की जानकारी मिली|
- मैं गलत हो सकता हूँ – लेकिन लगता है कि ये वे लोग हैं जो तथाकथित हिन्दू वर्ण व्यवस्था में नीचे सामाजिक स्तर पर थे, कमजोर थे, इन्होने आसानी से जीवन जीने का सौदा धर्म परिवर्तन कर लिया होगा|
- "कोई नृप हों हिं हमें का हानि" ?
- जो सामाजिक तौर पर पिछड़े हैं/थे उन्हें मिला क्या ?
- एक भ्रम कि हम तुम बराबर लेकिन फिर भी 'एक' नाम मिला, 'एक' शक्ति मिली, एक शक्ति मिली, एक खुशफहमी भी, मंदिर में प्रवेश नहीं था मस्जिद में तो है | लेकिन सुना है वहां भी काफी चीजें मस्जिद भी, ताजिया भी अलग है|
- इन्हें तो पूरी तरह भारतीय मुसलमान की पहचान बनानी चाहिए और आकाओं भटके आतंकवादियों से अलग हो ही जाना चाहिए|
- तथाकथित हिन्दू समाज को भी इनके नामकरण को बदले बिना तुरत मान लेना चाहिए|
- परन्तु भेद तो हिन्दू समाज में अभी भी है | काफी कुछ ठीक हुआ है सबकुछ नहीं;

'अलबरूनी का भारत'

- अलबरूनी' एक फारसी विद्धवान ने ठीक कहा है |
- "हिन्दुओं में अपने धर्म से निकालने की (उन्हें द्वितीय स्तर में भेजने की एक सौ पचास तरीके हैं परन्तु बाहरी को अपनाने की एक भी नहीं" – फिर तो निश्चित है कमते जाने की, सिकुड़ते जाने की, अन्ततः मिट जाने की –

इसी रास्ते पर तो हिन्दू हैं -

- ऐसा नहीं है कि अगड़ी जातियों (चालाक लोगों) ने 'धर्म' की बलि दी और अपनी सुरक्षा कर ली ; 'अशरफ' या ऐसी उच्च जातियों में अपने का शामिल करने में सफल रहे |
- तथाकथित हिन्दुओं को आज भी यदि बचना है, और अपनी संस्कृति को बचाना है तो पहले यदि नहीं सीखें तो अब तो सीख ही जाना चाहिए एक जुट हो जाओं के नारे नहीं लगाकर |

हृदय से एक हो जाओं

"राह में आयें जो दीन दुःखी उन्हें गले से लगाते चलो"

टीक-टिका जनऊ का भेद मिटाते चलो |

आपरेशन सिंदूर : समझ अपनी अपनी; मेरी

- यह एक बड़े आतंकी हमले का निमंत्रण है,
- निमंत्रण देने वाले भारत में अन्दर ही बैठे हैं|

नेता और कुछ अन्य|

- बालाकोट सर्जिकल स्ट्राईक के बाद पहलगाम हो सकता है, तो इसके बाद क्यों नहीं ?
- इन आतंकी घटनाओं का कारण?
- संसद, मुम्बई, पुलवामा पर हमला.... न जाने कितने –
- समझ नहीं आता पाकिस्तान को क्या मिलाता है, अन्दर वाले को तो मिलता है|
- इसके पीछे एक मानसिकता है, 'धर्म' का अज्ञान है, मानवीय मूल्यों के प्रति नकारात्मकता है | हमास हो या हूति; इसको नष्ट करना बहुत मुश्किल है | विश्व समुदाय के लिए बहुत जरुरी|
- कश्मीरी पंडितों के GENOCIDE के जिम्मेदार लोग राज कर रहे हैं, पहलगाम और अन्य घटनओं में भी तो सभी LOGISTIC SUPPORT अन्दर से ही है | धर्म से ज्यादा सत्ता की बात है | ख़ास कर कुछ विपक्षी राजनैतिक पार्टी के, उसके नेताओं से है, गाँधियों से है|
- आंतरिक सुरक्षा ज्यादा जरुरी है|
- फिर न आतंकवादी हमला होगा, न वाह्य हमले|

बदला नहीं बचाव

- बदला नहीं हमेशा के लिए बचाव (preventive) चाहिए|
- एक मात्र दूरगामी उपाय पाकिस्तान को हमेशा के लिए सीमित करने का है|
- अंदरूनी, अप्रगट, राजनैतिक आतंक-बंधु के सफाये का है|
- बलूचिस्तान, सिंधु, POK के अलग होने से पंजाबी-पकिस्तान को कुछ सोचना पड़ेगा|
- समाप्त फिर भी नहीं होगा क्योंकि उसके पास अपनी खीज और बड़ा उद्देश्य है" धर्म के हथियार से सत्ता में रहने का दूसरा उपाय नहीं है, गजबाये हिन्द की गलत अवधारणा भी अज्ञानता ही है|
- मानवीय मूल्यों, मानव धर्म की वैश्विक स्थापना के लिए वैश्विक प्रयास आवश्यक है|
- विश्व समुदाय के सोच का केंद्र 'मानव' नहीं व्यापार है, आर्थिक लाभ है, मनुष्य कुछ भी मायने नहीं रखता है|
- भूखे भेड़िये की तरह एक (मानव?) समुदाय दूसरे को चीर-फाड़ने की कोशिश में लगा रहता है|

शैतान : धर्म

- शैतान की उत्पति 'धर्म' से होती है|
- धर्म – धारण करने योग्य जीवन शैली, इसमें जबर्दस्ती का स्थान कहाँ है|
- जैसे ही धर्म हथियार बन जाता है – साधन हो जाता है, लाभ, लोभ या सत्ता के लिए, तो शैतान उत्पन्न हो जाता है|
- जितना ज्यादा लोभ, सत्ता की हवस उतना ही बड़ा शैतान!
- धर्म परिवर्तन सबसे ज्यादा शैतान पैदा करता है|
- सभी युगों में सभी धर्मों में/द्वारा हुआ है|
- ईसाईयों (मानव प्रेम की विचार धारा वाला) में भी, दर्शन में नहीं तो वर्ण व्यवस्था को रूढ़ करने में हिन्दूओं (तथाकथित सनातन) में भी, वौद्ध मठ्ठों की स्थापना में भी|
- मानव मस्तिक दों विचारधाराओं में विभाजित है शैतान और भगवान/खुदा.....!
- धर्म (करणीय या अकरणीय के) आत्मचिंतन से निर्धारित हो जाता है, निर्देश/आदेश से नहीं|

सोच की इमानदारी : जेहन में उठते सवाल

क्या '65 में उन्हें सवक नहीं मिला ?

क्या '71 में भी सवक नहीं मिला था ?

इस बार मिल जाएगा ?

- जो मरा, मराया पहलगाम में या युद्ध में उसके अलावा और उसके बाद सबको शांति चाहिए |
- उनका क्या जो परिस्थिति (आतंक)के शिकार हुए या जो नौकारी के कर्तव्यवश अपने परिवार का उत्सर्ग कर बैठे |
- घोड़े बाले को कौन पूछ रहा है जिसने अप्रतिम साहस दिखाया और असली कर्तव्य (धर्म) का पालन किया |
- अगली बार फिर मुम्बई /सदन पर हमला होता है तो किसका क्या होगा ?
- क्या इन्हें यह समझ आया कि मुम्बई में हजारों और मारे जाते, सदन हमले में प्रधानमंत्री/मंत्री/अन्य मारे जाते तो क्या हो जाता, पुनः ऐसा होता है तो इन्हें क्या मिल जाएगा?
- देश तो निश्चित रूप से चलता ही रहेगा |

Contd.

- लगभग इसी तरह फिर आतंकी हमले नहीं करके यदि शांति से रहकर आर्थिक सामजिक उत्थान करते तो इनका क्या बिगड़ जाता है ?
- ऐसे लोग जिन्होंने सीमा के अन्दर सेना का विरोध किया, रास्ता रोका पहलगाम या अन्य आतंकी घटनाओं में उन्हें मदद की; ये सीधे सीधे पाकिस्तानी सेना के सिपाही नहीं है ? ऐसा कदम तो किसी पाकिस्तानी नागरिक ने भी नहीं उठाया|
- इन्हें पाकिस्तानी सेना मानते हुए इन पर उसी प्रकार की कारवाई क्यों नहीं की गयी/ की जाये जैसी आतंकियों के साथ किया, घुसकर मारा ?
- कश्मीर के नेताओं से यह पूछ-पूछ कर भी क्यों नहीं पीटा जाता है, कि कौन कसूरवार है कौन नहीं; वही चिन्हित कर देते ?

सोच की इमानदारी ही/भी धर्म है |

- पहलगाम में धर्म पूछकर गोली मारने वाले और दूसरे (विपरित) धर्म की रक्षा में अपनी जान गवांने वाले में से धर्म की स्थापना किसने की, धर्म को किसने समझा, अपने धर्म का सम्मान किसने बढ़ाया, उस घोड़े वाले का स्मारक पहलगाम के उस मैदान में अवश्य बनना चाहिए|
- पहले हमीद, इस युद्ध में सरफराज, कर्नल कुरैशी ने अपने धर्म, अपने देश और अपना मान बढ़ाया|
- कठमुल्ले, आतंकी और मुनीर क्या अपने धर्म का मान बढ़ा रहे हैं ?
- असली धर्म का पालन तो जन सामान्य कर रहा है, जो मतपत्र के लिए देशद्रोही राजनीतिज्ञों अथवा सही भय को भी जब्ज कर, मिडिया, सोसल मिडिया के दुष्प्रचार को दरकिनार कर साथ-साथ चल रहे हैं|

कुछ प्रश्न और उग आते हैं |

- धर्म और राज्य का सम्बंध और इनका मानवीय मूल्यों से संम्बध समझ नहीं आता है |
- विश्व में अनेकों देश है, उनके घोषित धर्म है |
- एक ही धर्म की सत्ता वाले भी कई राजनैतिक देश है | आपस में युद्धरत है/रहे है/ रहते/रहेगें |
- कुछ धर्म निरपेक्ष हैं तथाकथित सेक्यूलर है – धर्म के नाम पर सबसे ज्यादा दंगे/युद्ध के शिकार हैं |

धर्म की खुशफहमी में न रहें |

- यह समझने की अत्यंत आवश्यकता है कि बमबारी होने पर (किसी भी तरफ से) बम क्या धर्म पूछकर मार रहा था? यदि परमाणु बम चल जाता या चलेगा तो धर्म पूछ कर प्रहार/नहीं संहार करेगा; सिर्फ देश पूछ कर करेगा |

'धर्म', 'राज्य' या समाज ?

राजनैतिक सत्ता तो वस्तुतः राज्य है |

अन्यथा इरान, इराक युद्ध क्यों करते?

- अरब के सभी मुस्लिम धर्म वाले देश एक ही धर्म के, भूभाग भी एक ही, फिर एक ही शासक/शासन वाले देश क्यों नहीं हो जाते ?
- इसाई धर्म वाले, दुनियों के अनेकों देश एक ही देश या एक ही कानून वाले देश क्यों नहीं हो जाते !
- वौद्ध धर्म वाले चीन, जापान, कोरिया भी एक ही देश/कानून वाले हो जाते !
- सबकुछ होते हुए भी एक अंतराष्ट्रिय व्यवहार (कानून) प्रणाली है यह कैसे और क्यों विकसित हुआ |
- देश का कानून होता है | धर्म का निर्देश होता है | (धार्मिक का उदाहरण ऊपर में है ही)
- अतः कानून राजनैतिक एवं एक भौगोलिक सीमा के अन्दर एक ही होना चाहिये (ucc)

धर्म सिर्फ मानव धर्म है –

- व्यवहार सिर्फ जीओ और जीने दो का जीवन - व्यापार है

त्रुटिहीन कोई नहीं,सीमायें हैं-

मोदी दोषी हैं |

- पं बंगाल में राष्ट्रपति शासन लागू नहीं करने के लिए
- केरल में राष्ट्रपति शासन लागू नहीं करने के लिए
- कर्नाटक में देश विरोधी कार्यों को नहीं रोकने के लिए
- जम्मू-कश्मीर में genocide करने वालों को राज करने देने के लिए
- JNU, AMU जैसे विश्वविद्यालयों में देशद्रोहियों के शिक्षण प्रशिक्षण एवं बढ़ावा देने के लिए |
- छद्म सेक्यूलर लोगों को दण्डित नहीं करने के लिए
- बोलने की आजादी और अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर और विशिष्ट व्यक्तियों और मिडिया के आगे आत्मसमर्पण/देश का शीश झुकाकर सहने के लिए |
- न्यायालय और व्यवस्थापिका के बीच सीमा रेखा को स्पष्ट नहीं करने के लिए |
- दोषी हैं स्पष्टतः सही 'एक देश; एक चुनाव' को लागू नहीं करने के लिए |
- दोषी हैं दलगत राजनीति के खामियों को दूर कर दल विहीन राजनीति नहीं करने का !

आतंक : आतंकी – क्यों ??

- पहलगाम के शूटर्स आतंकी थे या आतंकी के हथियार ?
- आतंकी तो दुसरे देश की सीमा के अन्दर थे|
- और उन्हें चलाने वाले उस देश के सेनाध्यक्ष , राष्ट्राध्यक्ष तो अभी भी है और रहेंगे|
- शूटर्स को पनाह देने वाले, और उनसे भी से ज्यादा आतंकी, उनका बचाव करने बाले तो अभी भी इसं देश के, इसी देश में रह रहे हैं, इसी देश का खा रहे है, और इसी देश को खा भी रहे है|
- इनकी पहचान नहीं कराना, किसी के लिए भी, परिवार और संबंधियों के लिए भी मानव और देश धर्म है, इन्हें छुपाना बचाना बड़ा देशद्रोह एवं मानवता के प्रति अपराध है|
- यदि परिवार या आस पास के सदस्य इन्हें छुपाते-बचाते है तो अपराध में ये बराबर के भागीदार और सजा के हकदार है, इन्हें माफ़ करना प्रशासनिक नपुंसकता है|

Contd.

- इसमें वे भी शामिल है जो कहते हैं कि "बेकसूरों पर करवाई न हो," आटा के साथ कुछ घुन पिसेगा|
- ऑपरेशन सिन्दूर के बारे में प्रशासन,पत्रकारों द्वारा सीने पर वार किया, यह किया, वह किया, ठीक है परन्तु उन आतंकियों के साथियों की पहचान और सफाया न करना तो सिर्फ अगली दुर्घटना की तैयारी है|
- तुर्किये, चीन या अजरबैजान के राष्ट्राध्यक्ष तो वैश्विक आतंकी है वह भी अकारण, ये तो स्वभावतः आतंकी है|
- बड़े राष्ट्रों के राष्ट्राध्यक्ष भी असली आतंकी है – अमेरिका, चीन और रूस!
- इन्हें व्यापार चाहिए, व्यपार के आगे जिंदगियां, दुसरे देश के मानव मायने नहीं रखते|
- स्थानीय आतंक/गुंडागर्दी का बड़ा रूप भी कहीं न कहीं व्यापार से जुड़ा है|
- मुद्रा ने न सिर्फ जिंदगी का मोल लगा दिया है, बल्कि इसने सीधे-सीधे जिंदगी / ख़ुशी खरीद भी लिया है|

अधार्मिक धर्मज्ञता

- हाथों में तलवार लिए धर्मज्ञाता जैसे जकारिया एवं अन्य कुतर्क पूर्ण धर्म-मीमांसा करते हैं, आतंक का पैगाम और कारण देते है| आतंक का जड़ और पोषण तो यहाँ है |
- अभी हाल में एक पोस्ट में एक अत्यंत प्रभावशाली सा वृद्धव्यक्ति पूछ रहा था, बेहूदा कटाक्ष कर रहा था |
- “गाय इनकी माता है तो पिता ?..... और चेहरे पर विद्रुप हंसी थी” 'ज्ञान' फैला रहे थे |
- मेरे ध्यान में इसके पहले कभी यह सवाल पैदा नहीं हुआ की प्रभु यीशु कैसे आये !!
- गाय' माता तो पिता कौन असल में प्रभु यीशु पर भी सवाल कर रहे थे |
- ये आतंक का आधार तैयार करने वाले हैं | इन्हें पहले सजा मिलनी चाहिए, परन्तु हमारी मिडिया इन्हें प्रचारित करती है |
- चीन को और भूमि चाहिए, किसी को खिलाफत चाहिए, किसी को गजवाए हिन्द ! धर्म पालन की जगह धर्म परिवर्तन किसी का मिशन है यह सब किसके लिए ? जिंदगियों से अलग इन्हें क्या चाहिए |
- आतंक विचारों में छुपा है |
- विचारों का विश्वयुद्ध आवश्यक है |

क्या आप भारत से डरते है ?

- 4.16 ट्रिलियन डालर की आर्थिक मजबूती
- आत्मनिर्भर भारत- रक्षा उत्पाद- ऑपरेशन सिंदूर में भारतीय रक्षा उत्पादों का प्रदर्शन एवं परीक्षण|
- संचार व्यवस्था, डिजिटल भारत, स्टार्टअपस्, वैश्विक कद, सम्मान, भारतीय मुसलमानों द्वारा 'भारत' देश को स्वीकृति इत्यादि|

सबसे ख़ास विकाश की गति !

- चौथी से तीसरी अर्थव्यवस्था, उसके बाद....?
- किसको डर नहीं लगेगा, अमेरिका, चीन .... समकक्ष हो जायेगा फिर, उपर चला जाएगा,
- "ऐसा तो किसी कीमत पर नहीं होना चाहिए"|
- क्यों नहीं टांग खीचेंगे, माध्यम/उपाय जो भी हो|
- धर्म उन्माद, आतंक, अन्यान्य उपाय, पड़ोसी से उलझाना; कोरोना फैलाना भी एक उपाय है|
- सबसे कारगार उपाय है- आन्तरिक अव्यवस्था, बनर्जी, यादव, गाँधी, शेख सईद को कुर्सी का भरोसा देना|
- कुछ को कुर्सी और उसके द्वारा भ्रष्टाचार, लूट, दूर खिसकती नजर आ रही है|
- हमें बहुत सावधानी से अपनी रक्षा करनी है|

Sonam:-Tragedy or Trend?

- The incidence is not singular rather regular; many may not be reported or highlighted.
- Effects &- Importance :- Causing trust deficit between eligible bachelors, recently married couples,Many examples of well established families with even multiple children,have been ruined, Parents seeking relation for their wards. Parents living with the strained couples.
- The last & smallest the nuclear family is breaking- not forming or living with love & trust but distrust & stress-causing suicide, homicide, multiple mental & psychosomatic illness in adult.

What needs to be done

- Hype of (wife's) women role must be balanced.

Contd.

- Mankind has two equal lower/limbs similarly society must be of equal Male/Female importance.
- Act like 498A must be scrapped/replaced by more logical, balanced provisions with differentiation in educated & earning parters
- The physical violence is result from previous psychological, verbal situational trauma /violence by either party.
- Both must have responsibilities towards their in laws also if they reside with them.
- Judgment in court must be quick & panishment,exemplary & different. Delay causes suffering to both partners,family society& nation.
- Laws must be revised every 20 years.

आपातकाल : आदर्श प्रशासनिक काल !

- मेरे जैसे आम व्यक्ति के लिए आपातकाल एक आदर्श समय था,
- सभी स्कूल,अस्पताल,कार्यालय समय पर खुलते सुचारू रूप से चलते और बंद होते थे|
- सभी परिवहन रेल बस इत्यादि समय से !
- कार्यालयों में कोई घूस, भ्रष्टाचार नहीं !
- सामान्य जन से शिष्टाचार में बाते होने लगी थी !
- शिकायते उच्चतर स्तर पर सुनी जा रही थी,
- मुझे और क्या चाहिये ?
- बोलने की आजादी -? आज है; तो देश की, समाज की दुर्गती देख रहे है-
- मैं तो बेजुबान तब भी था आज भी हूँ –
- लोकतंत्र ?- कही से तो अनुभव नहीं हो रहा है|
- पूरे देश, बंगाल, कर्नाटक, यू. पी. केरल की क्या हालत थी/है कितना लोकतंत्र है? स्पष्ट है !
- लोकतंत्र में एक और संभावना है/थी, मैं भी मंत्री हो सकता हूँ – लूट खसोट के लिये ही-तो !
- राजनीति की गुण्डागर्दी बिहार, यू. पी., बंगाल (पुरे विश्व में); पैसे का खेल अमेरिका – सबसे सक्षम लोकतंत्र में भी कितना स्पष्ट है !
- मैं/आप इसमें कहाँ हैं ? मुझे इसकी जरुरत नहीं है !
- आपातकाल में ऐसा नहीं था|

आपातकाल तुरंत लगना चाहिये|

तानाशाही

- सबसे अच्छा तो मुझे लगता है कि एक सत्पुरुष (राम) को सभी आपातकाल पावर दे कर शासन चलाने दिया जाय/
- सभी समस्यायें दूर हो जायेगी, न परिवारवाद, न भ्रष्टाचार, न चुनावी तिकड़म, न सौदेबाजी, न मुफ्तखौरी, न हरामखोरी का एलान, न स्त्री पुरुष बटबारा, न धांधलीं होगा, न कदाचार, क्या चाहिये ??
- तानाशाही -? राजनितिज्ञों की परोक्ष रूप से कब नहीं है/थी ? और सरकारी कर्मचारियों की प्रत्यक्ष रूप से कब नहीं थी/है/
- एक पिउन मुहर नहीं लगायेगा आप क्या कर लेंगें|
- मेरा एक स्कूल है, सपनों का, जीवन का अन्तिम लक्ष्य, मेरी मान्यता है की सभी स्कूलों में बच्चों को सैनिक शिक्षा दी जानी चाहिये / मेरी मान्यता है की देश के हर युवा के लिये सैन्य सेवा कम से कम २ साल अनिवार्य होना चाहिये / उसके बिना कोई नौकरी, व्यापार, मतदान अधिकार नहीं, नागरिकता भी नहीं मिलनी चाहिए | अतः अपने स्कूल में केन्द्रीय सरकार की सैनिक स्कूल की

Contd.

योजना के अंतर्गत आवेदन करना चाहता हूँ | कई विभागों की अनुशंसा चाहिये सभी में अर्चना, पूजन, आरजू, मिन्नत कर लिया गया | शिक्षा अधिकारी को पहले पन्द्रह हजार, नहीं पच्चीस हजार ---- आरजू – नहीं पचास हजार .....भाई ज्यादा है; नहीं १ लाख चाहिये – अनुशंसा नहीं मिली – कोई बात नहीं, कोई व्यक्तिगत शिकायत नहीं |

परन्तु

- पैसे से इतर यह समझ आया कि जिन पदाधिकारियों को मैं टैक्स के रूप में वेतन देता हूँ, पेंशन देता हूँ, पारिवारिक पेंशन देता हूँ,महंगाई भत्ता, इन्शुरेंस देता हूँ, उन्हें वेतन से कई गुना घूस भी देता हूँ / फिर वे बात नहीं कर पिउन से दुत्कार कर, हेकड़ी के साथ यह कहकर की मैं यह कार्य (कर्तव्य) नहीं करूँगा; भले ही आलाकमान क्यों न कहें |
- एक भारतीय नागरिक सवैधानिक अधिकारों से वंचित, घोर अपमानित होता रहता है – 'तलाश' इसी का समाधान तलाश रहा है |

अमेरिका : रूस : भारत

- 'अमेरिका फर्स्ट' नीति सराहनीय और अनुकरणीय है|
- ट्रम्प की कड़क, सीधी बात भी सही है|
- व्यापारिक हित ही कूटनीति, राजनीति, राजनैतिक सम्बन्ध हैं|
- परन्तु बिना पेंदी का लोटा होना, हाथ उमेठना, धमकी देना स्वीकार्य नहीं है|
- ट्रम्प को आदमी और कुत्ते में फर्क समझना चाहिये,
- हमें दुम हिलाने की जगह, अपनी खुद्दारी और बढानी होगी|
- रूस लम्बे समय का और आपातकाल का विश्वशनीय सहयोगी है|
- ज्यादा होशियार इसलिए लगता है कि संबधों के स्थायित्व का मूल्य समझता है; इसलिए हरदम बदलती टेक्नोलॉजी को देने में हिचकता नहीं है|
- भारत भरोसेमंद है, व्यापार का स्थान संवेदना, मानवीयता के साथ है करता है|
- ट्रम्प अमेरिका की तौहीन कर रहा है – अब इसे अमेरिका का राष्ट्रपति रहने का अधिकार नहीं है|
- ट्रम्प से (अपने राष्ट्रीय स्वाभिमान से-) समझौता मुझे व्यक्तिगत एवं राष्ट्रिय अपमान (Humiliation) लगता है|

गलत को गलत कहना आवश्यक है |

15 अगस्त

राजकीय आदेश !

- '15 अगस्त को मांस-मछली न खायें' | (मुम्बई 2025) तो क्या बकरीद को हर किसी को मांस खाना ही है ?
- व्यक्तिगत भोजन और सार्वजनिक आयोजन में फर्क है|
- व्यक्तिगत सुचिता, स्वच्छता वांछनीय है, व्यक्तिगत है; सार्वजनिक सुचिता स्वच्छता परमावश्यक है, सामाजिक अनिवार्यता है; बाध्यकारी हो सकता है|

वैश्विक लोकतंत्र: विलुप्ति के कगार पर !

- विलुप्त होने के कगार पर के जीवों की यथासम्भव लोग (विश्व) रक्षा करते है|
- छोटी मछलियों से लेकर खूखार जीवों तक; कभी कभी तो इसमें प्राणियों (आदमी) की जानें जाती हैं|
- हाल में यहूदियों के साथ यह कोशिश हुई थी | अब भी जारी है|
- भारतीय महाद्वीप में पाकिस्तान, आफगानिस्तान, जम्मू कश्मीर में हिन्दुओं के साथ ऐसा ही हुआ है|
- बंगलादेश में हो रहा है | पूरा विश्व देख रहा है|
- नरसंहार के साथ सबसे बुरी बात अत्याचार, क्रूरता, विवशता विभत्सता की होती है, जो हत्या से भी बुरी और अस्वीकार्य है | फिर भी इस संसार में जहाँ बाहुबली राष्ट्र हैं, लचर UNO है, यह हो रहा है, सब चुप हैं | परन्तु कहते है कि हम 'मानव' है, हमारा एक धर्म भी है|
- पहले भी red Indian के साथ, America, Australia etc में हो चुका है|
- बहुत गलत है| यह नरसंहार वैयक्तिक/शारीरिक नहीं वल्कि भावनात्मक (धर्मान्तरण) है|
- उन भावनाओं का 'जहाँ जियो और जीने दो' का सिद्धांत, उदारता, दयालुता, मानवीयता है; का विलुप्त होना अन्ततः मानव जाति के लिए अशुभ है | शायद मानव जाति के विलुप्त के होने का प्रारभिक चरण है|

ट्रम्प का टैरिफ : हमारा संकल्प

मैं बहुत खुश !

- किसी के Dictat के आगे झुकना आत्मसम्मान की मृत्यु, वास्तविक मृत्यु है |
- मोदी जी ने बचा रखा |
- अच्छे कपड़े, (Export quality) गरीबी के कारण नहीं खरीद सकता है, उपलब्धता भी नहीं होती, अब ये बाहर न जायेंगे, मैं भी खरीद सकूंगा |
- झिंगा/मछली बाहर नहीं जायेगा- मेरी पसंदीदा चीज है | मिलता नहीं है कुछ तो सस्ता भी होगा और मिलने भी लगेगा |कभी-कभार की जगह हर सप्ताह खाने में क्या दिक्कत है; झिंगा सड़ेगा नहीं |
- Genetic manipulation से उत्पादित खाद्य सामग्री खाने से पहले/खरीदने से पहले बहुत मन मारना पड़ता है | घर की चीज, Local-बढ़िया होगा स्वादिष्ट होगा

हम अपने उत्पाद का खपत कर लेंगे |

- हमें नयी चीजें, जरुरी चीजों के बनाने की मज़बूरी होगी और जरुरत, अविष्कार और खोज में बदलेगा फिर आत्मनिर्भरता- आत्मसम्मान-आर्थिक उन्नति में तब्दील होगा |
- हम सभी एक जोड़ी कपड़ा और ख़रीदें और फिर हर सप्ताह झींगा मछली खाना शुरू करें |

अपनी- अपनी कीमत |

- कोरोना हो या सुनामी,बाढ़ हो, आगजनी हो लोगों को अपनी जान की बाजी लगाकर दूसरों की मदद करनी चाहिए|
- ख़ास कर ख़ास लोगों की – आपकी परवाह हो न हो|
- सैनिक सीमा पर जान दें हम उन्हें 'मान' दें!
- राजनीतिज्ञ बोट के लिए देश को चाहे कितना भी बर्बाद करें|
- चिकित्सक कोरोना की लड़ाई में जान दें!
- हम उनपर 'फूल' वर्षा दें!
- नहीं तो थाली बजा दें!
- ये सब उनके कर्तव्य हैं, धर्म है|
- कोरोना के बाद/बावजूद सभी सर्विसेज चालू हो गए है|
- कुछ आकस्मिक सेवायें है उन्हें हर हाल में चालू रखना कुछ लोगों की ही जिम्मेवारी है|
- उनका जीवन उनका परिवार सब समाज का|
- परन्तु प्रशासन, कार्यालय, न्याय, शिक्षण इत्यादि आकस्मिक या आवश्यक सेवा नहीं हैं|

करें या न करें!

देश का असली दोष

- राष्ट्रपति पुतिन एवं राष्ट्रपति ट्रम्फ सीधी कुश्ती कर फैसला क्यों नहीं कर लेतें ?
- राष्ट्राध्यक्ष शी जिन पिंग और मा० प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी भी ढिशुंग-ढिशुंग कर फैसला कर लेते |
- औरों की बात मैं नहीं जानता परन्तु मेरे परमादरणीय नरेन्द्र मोदी जी तो बिल्कुल पिट जायेगें क्योंकि जब भी सीधी लड़ाई होगी; यहाँ एक वाम पंथ होगा जो नरेन्द्र मोदी का वायां हाथ पकड़े रहेगा, एक दक्षिण पंथ होगा जो उनका दायां हाथ मजबूती से पकड़ेगा | एक भारत टुकड़े-टुकड़े गैंग होगा जो उनका एक पैर पकड़ेगा और दूसरा कट्टरवादी, आंतकवादी, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता वाले | वेचारे मोदी कबतक सर धुनेगें| जिन पिंग के हाथ पैर सबकुछ स्वतंत्र होगा, पूरा शरीर चुस्त और दुरुस्त और एक होगा |
- जिसकों कहें धुन दें, जैक मा हो या राजनैतिक प्रतिद्वंदी |

घूस देने वाले का भी दोषी है |

- बेचारे घुसखोर क्या करें ?
- जिनका कार्य है, वे या पैरवी करने वाले तो दोषी हैं ही | पैरवी सुनने वाले क्या करें |
- धूस लेने वाले बेचारे क्या करें ?
- वेतन तो पद का मिलाता है |
- काम के तो दाम लगेगें |
- घूस नहीं लेने, पैरवी नहीं सुन निश्पक्षता के साथ कार्य करने का थोड़े कोई कानून है |
- रेप करने वाले क्या करें, रूप और सेक्स की इच्छा जो है |
- जब आपका उचित कार्य नहीं होता है तो यह आपका रेप ही है|

किसान आन्दोलन : हम

- प्रदर्शन/आन्दोलन का प्रजातांत्रिक हक़ लोकतंत्र एवं देश को बंधक बनाने का हक़ कदापी नहीं है |
- आजकल कुछ मुख्यमंत्री भी केन्द्रीय सरकार को बंधक बना लेते हैं | स्पष्टतया हिंसा करवाते हैं, संसद/केन्द्र की सत्ता को अस्वीकार करते हैं - संधीय व्यवस्था की धजियाँ उड़ रही हैं |
- यह सरकार/देश बाहर से कैसे लड़ेगा अंदरूनी लड़ाई ही इसे खाये जा रही है |
- बिना आधार के अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता गलत है |

मानवाधिकार आम आदमी

- मानवाधिकार एक / कुछ व्यक्ति के लिए काफी भावनात्मक एवं वास्तविक महत्व रखता है, परन्तु देश के स्तर पर यह सिर्फ महाशक्तियों का दूसरे देश के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप का सीधा हथियार है|
- कई लोग खासकर सुरक्षा एजेसिंया इसे दानवाधिकार कहती है|
- इसी तरह का दुरुपयोग अभिव्यक्ति की आजादी का भी होता है|
- हम बिना मुंह वाले सुनते हैं, सहते हैं|

सरकारी जासूसी : कानून

- CIA, KGB, MOSAD, RAW, ISI, M1-6 (UK), MSS (CHINA), BND (GERMANY), DGSE (FRANCE) हर देश/सरकार का अपना तंत्र है | उपयोग दूसरे देशों (मित्र देश भी) में होता है परन्तु अक्सर देश के अन्दर भी इसका उपयोग होता ही है | e.g. Watergate etc..
- चाणक्य एवं अन्य सफल राजतंत्रों में भी जासूसी बहुत प्रबल व्यवस्था थी |
- औधोगिक जासूसी भी होती रही है |
- आजकल तो DIGITAL जासूसी, DATA चोरी, हैकिंग चरम सीमा पर है |
- हल्ला मचा लें, अपनी बारी में, आप भी ऐसा ही करते थे, आगे भी ऐसा ही करते रहेगें |

देशद्रोह; दुधारी तलवार; निजता का कानून

- ऐसा शायद ही कोई वैज्ञानिक अविष्कार, कानून, संविधान है जिसका अच्छा एवं बुरा दोनों उपयोग नहीं हो सकता है|
- परमाणु शक्ति, जेनेटिक खोजें, कृत्रिम बुध्दिमता (artificial intelligence) दहेज़ निरोधी कानून, SC-ST संरक्षण कानून, अभिव्यक्ति की आजादी का कानून|
- उपरोक्त किसी चीज को भी रोकना सम्भव नहीं है|
- अतः देशद्रोह का कानून समाप्त करना, देशद्रोही प्रवृत्तियों एवं व्यक्तियों को अन्तिम हथियार देने के बराबर है|
- देशद्रोह कानून का सही उपयोग आवश्यक है|

कर-दाता संघ

- इसकी संकल्पना को कार्यरूप देना आवश्यक है |
- कर-दाता (प्रत्यक्ष या परोक्ष) बहुत व्यापक (लगभग हरेक भारतीय नागरिक) है |
- इससे सभी को 'सरकार' में सहभागित का एहसास होगा|
- ज्यादा से ज्यादा लोग यह समझेगें कि टैक्स के रूप में उनकी गाढ़ी कमाई का सही उपयोग हो रहा है या सांसद में सिर्फ हुल्लड़बाजी / गाली गलौज |
- सरकार विकास के प्रति समर्पित है या मेरे पैसों से वोट खरीद कर अपने दल का शासन स्थापित / अक्षुष्ण रखने के लिए हो रहा है |

कानून

- अपने विश्वास (धार्मिक/राजनैतिक/अन्य) पर लोग कत्ल, रेप, लूट-पाट, अंगभंग, कोड़े मारना, सामूहिक कत्ल, आगजनी इत्यदि ऐसा कोई घिनौना, जघन्य अपराध नहीं जो नहीं करते|
- जब कश्मीर या छतीसगढ़ में आतंकियों, बाहुबलियों, इत्यादि पर सुरक्षा/पुलिस बल कारवाई करता है तो सभी सम्भव माध्यमों से मानवाधिकार, लोकतंत्र की बात कान फाड़ देते हैं|
- आफगानिस्तान में, अन्य समर्थ/विकसित राज्यों में मानवाधिकारों और उसके नुमाइदों की पिछले १५ दिनों में एक बार भी आवाज सुनाई नहीं पड़ी | अमेरिका,ऑस्ट्रेलिया में हुये Genocide के बारे में कोई मानवाधिकार की बात कभी नहीं हुई|

आम आदमी, मानवाधिकार

- मानवाधिकार वाले किसी कमजोर पर जहाँ आंतरिक मामलों में दखलदाजी करनी होगी अपने सिद्धांत थोपेगें|
- लोकतंत्र का अक्सर समर्थन करने वाला भयानक अलोकतांत्रिक 'वीटो' लगाने वाला UNO कितना नकारा है, अमान्य है !
- वायरस का निर्माण, प्रसार कर पूरे विश्व को तबाह करने पर लोग एक जुट नहीं हो सकते तो तालिबान के विरुद्ध क्यों एक जुट होगें |
- जिस पर पड़े वो समझे' |

कानून सैन्यशिक्षा

- एक देश को दूसरे सैन्य बल से पूरी तरह न वियतनाम में, न उ० कोरिया में, न ईराक में, न जापान-चीन यद्ध में, न सीरिया में, जीता गया और न शांति स्थापित हुई|
- जन सामान्य की भागीदारी/मजबूती आवश्यक है जिसपर कोई विजेता होता है|
- मोदी जी का सभी विकाश शून्य हो जायेगा यदि यहाँ के सभी युवाओं को सैन्य शिक्षा देकर जन-शक्ति में नहीं बदला गया|
- भारत की सुरक्षा के लिए अनिवार्य सैन्य सेवा आवश्यक है|शीघ्रतिशीघ्र होना चाहिए|
- सामूहिक सोच का निर्माण आवश्यक है|

लोकतंत्र : गोडसे

- नाथूराम गोडसे के मन में कहीं न कहीं बापू महात्मा गाँधी के बारे में सम्मान रहा होगा जिसके कारण गोली मारने से पहले उसने उन्हें प्रणाम किया था|
- यह अपने बिचारों/मान्यता के प्रति आत्मोत्सर्ग था|
- (गोली मारकर बच निकलने का कोई पूर्व निर्धारित योजना या बारदात के बाद भागने की कोई कोशिश नहीं थी)
- देश के टुकड़ें करने वाले, अमरशहीद, विद्वान भगत सिंह के नाम पर राजनैतिक लाभ लेने की कोशिश करने वाले की जितनी भर्त्सना की जाय कम है| कुछ ख़ास लोगों ने इनका (गाँधी) चित्र अपने कार्यालय में लगाया है/थे | देश के धरोहर को बेच खाना बहुत गलत है|

बेरोजगारी : राष्ट्रीय चारित्रिक संकट

- कई पार्टियाँ और लोग ऐसा करते देखे जा रहे हैं|
- लाभ/अवसर तलाशते हताश, बेरोजगार और बेकार लोगों का झुण्ड गंभीर राष्ट्रीय चारित्रिक संकट है|
- धर्म परिवर्तन के प्रमुख कारण आतंकित जिजीविषा, सामजिक समानता की अनुभूति/ वर्चस्व प्राप्त करने का अवसर जो आर्थिक समानता के भी अवसर के रूप में देखा गया है|
- आज का अधिसंख्य मुसलमान इसी कोटि के है, ये बिल्कुल, अपने है, हम में से ही एक है जैसे विभिन्न जातियां|
- अद्वितीय, धार्मिक अनुशासन कम लोगों का अल्पसंख्यक की संज्ञा के कारण बहुत लोगों पर हावी होने/compete करने के अवसर के रूप में दिखता है, एवं राष्ट्रिय मुख्यधारा में एक अंर्तधारा (जो अक्सर टकराव का कारण) हो गया|
- जो 'धर्म' को व्यक्तिगत एवं आधुनिक समाज की इकाई 'देश' को मानते हैं अल्प संख्या में है| ज्यादातर लोग ऊंट किस करवट बैठता है देखना चाहते हैं – अतः मूकदर्शक या मौन स्वीकृति देने वाले है|
- तालिबान' जैसा जेहादियों के धार्मिक आतंकवाद, चीन का आर्थिक / सामरिक आतंकवाद, बड़ा आसन्न खतरा हैं|

सामाजिक मुद्दे अक्सर अत्यंत जटिल होते हैं |

जैसे – भारत में हिन्दू/मुसलमान

- इसके विरोध में, भारत और भारतीय "जियो और जीने दो" का वजूद रहने के लिए नागरिकों के लिए अनिवार्य सैन्य शिक्षा/सेवा (vulnerable/महिलाओं का भी) आवश्यक है |
- हासिये में पड़े लोगों को मुख्यधारा में शामिल करना उन्हें सशक्त करना आवशयक है |
- उपरोक्त कारणों से अधिसंख्य मुसलमानों को यह समझाना/समझना आवश्यक है कि उनकी सुरक्षा और संरक्षा देशहित में है न कि तालिबानियों /ISIS के साथ में है | धर्म व्यक्तिगत है/जिसका कोई अवरोध भी यहाँ नहीं है | मुठ्ठीभर, धर्मांधों,विभिन्न, कारणों से बने देश-द्रोहियों को हासिये में लाना भारतीय मुसलमानों का खास कर्तव्य है |

यूक्रेन समस्या:तलाश समाधान

- रूस की आशंका, असुरक्षा का एहसास |
- सोवियत संघ टूटा, फिर टूटे हिस्से में NATO अपना प्रभाव बढ़ाता गया |
- धीमा या छद्म हस्तक्षेप बिल्कुल गलत है |
- अन्ततः यह उब पैदा करता है, युद्ध होता है | अवश्यमभावी है |
- गलत राष्ट्राध्यक्ष सबसे गलत होते है |
- गलत को गलत कहें |
- साहस की बात है |
- यूक्रेन की रक्षा का भार कौन ले रहा है ? – पैसे देना, हथियार देना, वाह वाही करना, मनोबल बढ़ाना, आग में घी डालना है |
- भारत की सुरक्षा का भार कौन ले सकता है | वर्ष 1971 के युद्ध में रूस ने सीधा साथ दिया था |

Contd.

- "अपने सामानो की सुरक्षा स्वयं करें"
- भारत में सैन्य शिक्षा/सैन्य सेवा अनिवार्य करें |
- अंतिम ताकत आर्थिक ही है – चीन का उदय, अमेरिका को प्रभावहीन करना – आर्थिक उदय के कारण है |
- "अपनी आमदनी वाजिब तरीके से प्रतिदिन बढ़ाएं"
- आपकी आमदनी राष्ट्र की आमदनी है |
- यदि आतंकबाद गलत है तो 'सर्जिकल स्ट्राईक' सही है |

बजट

- एक आम उपभोक्ता अंततः सभी नियमों/कानूनों का भोक्ता भर हैं|
- अधिकाधिक DIRECT टैक्स वेईमानी और भ्रष्टाचार को बढ़ावा देता है|
- व्यवस्था के अनावश्यक खर्च असहनीय है|
- सार्वजनिक प्रतिष्ठानों जैसे एयर (इण्डिया) को अरबों रूपये की सरकारी मदद देते रहना; अनुचित है|
- अन्य सरकारी प्रतिष्ठानों के घाटे में चलना भी शोचनीय है; निराकरण, निजीकरण ही समझ में आता है|
- पूंजी' अंततः परोक्ष रूप से (INDIRECTLY) सत्ता को कुछ ही लोगों के हाथों में समेट देता है| यह भी गलत है एवं भयंकर गडबड़ी पैदा कर सकता है|
- पूंजी का शासन लोकतांत्रिक नहीं हो सकता है | अमानवीय हो जाता है | पुनः आम आदमी ही परेशान होता है|

Contd.

- जितना विशवास अधिकार और आत्म सम्मान, राष्ट्रीयता की भावना, सार्वजनिक प्रतिष्ठान रेल, संचार, व्यवस्था, ISRO, DRDO, HAL, नाभकीय, उर्जा इत्यादि संस्थान देते है उतना कोई व्यक्तिगत/प्राइवेट/कौरपोरेट नहीं दे सकता है | इन संस्थानों का भारतीय अखंडता में भी काफी योगदान है| सभी देशवासी को लगता है कि यह उसका अपना है |
- सभी चीजों का निजीकरण अच्छा नहीं है |
- भ्रष्टाचार मुक्त कड़े अनुशासित नागरिक आचरण की शिक्षा एवं परम्परा एवं बातावरण बनाना होगा |

बजट : निजीकरण

- प्राइवेट कौरपोरेट सिर्फ लाभ नहीं अधिकाधिक लाभ के कारण देश/समाज को त्रस्त कर सकते है|
- व्यक्तिगत लाभ के आगे राष्ट्रीयता, सामूहिक हित क्षीण होती चली जाती है|
- यह जनसामान्य की कर्तव्य हीनता एवं विधायिका और कार्यपालिका की अक्षमता (भ्रष्टाचार) ही उजागर करता है|
- सड़कों की तरह, पानी, हवा भी कुछ लोगों के कब्जे में चलने लगेगा, जिंदगी का मोल-तोल होगा|
- निजीकरण निदान नहीं है|
- मनरेगा और बिना काम के लोगों को पैसा देना आत्मनिर्भरता की भावना के प्रतिकूल है|
- मुफ्त में खाना, कपड़ा, रहना मिले तो भला कोई क्यों काम करे और यदि लोग काम न करें तो चीन के सस्ते सामानों की तुलना में विश्वबाजार में कैसे टिकेगें, भारत आत्मनिर्भर कैसे होगा, आर्थिक ताकत कैसे बनेगा, सम्प्रभुता और सम्मान कैसे मिलेगा|

निजीकरण : घोटाला

गलत को गलत कहना आवश्यक है|

निजीकरण से सिद्ध होता है कि :-

- सरकार अपनी ऐजेंसी से काम नहीं करवा सकती|
- रूस/चीन जैसी प्रतिवद्धता हमारे देश के नागरिकों /सरकार में नहीं है, जो सामूहिक उपक्रमों (PSU) द्वारा बेहतरीन कार्य कर सकें|
- निर्वाध निजीकरण में इसरो (ISRO) फिर AIIMS इत्यादि बिकने लगेगें|
- फिर IISC बंगलोर, अन्य शिक्षण संस्थाएं IIT, JNU क्यों नहीं बिकेगी, फिर देश का भूभाग और सीमाएं क्यों नहीं बिकेगा पैसे तो चाहिए वोट खरीदने के लिए|
- इस प्रकार सरकारी शिक्षण संस्थाएं एवं स्वास्थ्य संस्थाएं सभी बिक जायेगी|
- सरकार क्या करेगी ?
- Parallel प्राइवेट संस्थाएं होना अलग बात है|
- बंद कर देना/ अनुशासन/Productivity की सामूहिक जिमेवारी तय करना एक बात है और बेच देना बिल्कुल अलग|

वैश्विक लोकतंत्र

- कोरोना की खोज का कोई कारण नहीं जान पड़ता |
- आण्विक, रासायनिक और जैविक हथियार का विकाश निकृष्टतम अमानवीय विचार एवं कार्य है |
- इसका उद्देश्य आर्थिक गुलामी (या सीधी गुलामी) कायम करना है |
- यह एक भयानक मानवीय त्रासदी है |
- अपराधी को दण्ड देने की स्थिति में कोई नहीं है |
- द्वितीय विश्वयुद्ध जाति/राष्ट्रीय श्रेष्ठता की अवधारणा के चलते ही हुआ था |
- एक देश द्वारा आर्थिक स्त्रोतों व्यापार/जमीन पर कब्जा; का कारण यही है |
- परिणति विश्वयुद्ध या फिर गुलामी के रूप में ही होगी |
- आर्थिक गुलामी वास्तविक गुलामी ही है –
- इसके लिए एक सरकारी केंद्रीय एवं राज्य स्तरीय स्वायत शासी मिडिया (चैनेल एवं समाचार पत्र) होना ही चाहिए |
- सिर्फ इसी में सरकारी Advertisement देने से, राज्य एवं केन्द्र को करोडों-करोड़ों की बचत होगी एवं राजनैतिक अनैतिकता में भी कमी होगी | गलत प्रसारण पर, झुकाव पर पूर्वाग्रह पर एक गैर सरकारी शासी होना चाहिए जिसके प्रति रिपोर्टर जिम्मेदार होगें|
- ऐसा होने पर मिडिया पर प्रतिबंध सीधे या परोक्ष नियंत्रण कठिनतर हो जाएगा ||

लोकतंत्र में उपभोक्ता

जागो ग्राहक जागो !

जाग कर क्या करो ?

मुक़दमा करो, वकील करो,

छोटी खरीदारी के लिए

मानसिक शांति भंग करो या चुप चाप सहो |

- MRP से ज्यादा दाम नहीं देने का ?
- MRP ही न मालूम कितने गुणा बढ़ाकर लिखा हुआ है, उसपर दुकानदार मेहरबानी कर concession दे देते हैं | (घर से ?) - हम आँखे और सिर कृतज्ञता में झुका देते है |
- कपड़ा, दवाई, कासमेटिक्स कुछ भी हो |
- एक दवाई का दाम रु० 16500/-, अस्पताल सप्लाई रु० 12500/- तीन लेने पर लगभग 8000/- |
- कपड़े में हाल और भी बदत्तर है |
- ग्राहक कैसे जानेगा कि MRP होना क्या चाहिए ?

Contd.

- बड़े-बड़े सेलेब्रेटी (फिल्मी हस्ती, क्रिकेटर आदि) अत्यंत सामान्य उत्पादन का बड़ी-बड़ी फीस लेकर गलत प्रचार करते हैं|
- कई बार हानिकारक प्रचार करते है जिसके अनुकरण में कई बच्चों की जाने गयी है|
- हम (consumer) सबका मूल्य चुकाते है|
- Consumer तो consumed हो गया है|

जागो ग्राहक (ToVo)

- टी० वी० खरीदो, तमाशा देखो कम से कम 'दूरदर्शन' तो देखते थे|
- अब सेटअप वाक्स लगाओं, हर महीने अच्छा ख़ासा पैसा दो, फिर भी सभी चैनेल देख नहीं सकते|
- बड़ा से बड़ा टी० वी० खरीदो, परन्तु पूरा स्क्रीन शायद ही दिखाई दे, बगल से, नीचे से प्रचार देखते रहो|
- लौटेगें 2 मिनट बाद-
  - 2 मिनट बाद' भी एक झलक के बाद पुनः प्रचार देखें|
  - चैनेल बदलो तो सभी पर एक ही समय प्रचार देखो|
  - यह मनोरंजन है ? जरुरी जानकारी है ? या प्रचार देख कर झल्लाने, मूड खराब करने के बदले पैसे देते रहें, हर माह|

जागो ग्राहक – बिजली सेवा

- लगातार सेवा नहीं मिलाती है; तो विभाग क्या करे ? ऊपर से फाल्ट है|
- Voltage उठा पटक से आपके लाखों रुपये के सामान ख़राब हो जाय, तो विभाग क्या करे ? आप कुछ और व्यवस्था करें|
- कुछ खराबी होने पर कर्मचारी सुविधा शुल्क लें, तो विभाग क्या करे ? आपको नहीं देना चाहिए (ध्यातव्य : घूस देना लेने के बराबर का दोष है|)
- यदि गलत बिल है तो पहले चुका दें, फिर कार्यालय का चक्कर लगाते रहें|
- गलत बिल आया क्यों ? इसके लिए कोई जिम्मेवार नहीं ! भले ही रु० 800 की रु० 80000/- का बिल देखकर आपकी धड़कन रुक जाय|
- आपने अतिरिक्त स्विच लगाया, ताकि यदाकदा काम आवे परन्तु चार्ज KV की गणना सभी को जोड़कर होगा, मानो आपका सभी स्विच हमेशा काम करता रहता है|

Contd.

- बिजली उपयोग सम्बंधी कोई गड़बड़ी, सीधा जेल |
- बिल्कुल Anti consumer byelaws हैं : 'जागो ग्राहक ! जागो' का नारा लगाओ, कोई देखनेवाला नहीं :
- नजर के सामने व्यापक बिजली की चोरी; कोई देखने वाला नहीं, कानूनी रूप से भी, कुछ कमजोर लोगों को मुफ्त बिजली दे दी जाय कोई बात नहीं;उद्योग को, कृषि को सस्ती बिजली जो सही रूप से बिजली शुल्क देते हैं वे ही बिजली विभाग के सभी घाटे पूरी करें !

भागो ग्राहक ! भागो !

भाग सकते हो क्या ?

- Mobile नहीं आने तक हर टेलीफोन का टेलीफोन उपभोक्ता विभाग के अधिकारियों/कर्मचारियों की उँगलियों पर नाचता था, न मालुम बिना तार के बिजली कब मिलेगी ?

तकनीकि रूप से बेहतर होना होगा |

शिक्षा सेवा/स्वास्थ्य सेवा

- खर्च सीधे GDP का X प्रतिशत ..
- व्यवस्था और स्तर आप सभी जानते है|
- शिक्षा लेना है ? Coaching करिए, ट्यूशन करिए या प्राइवेट/पब्लिक स्कूल में पढ़िए|
- नागरिकों का खर्चा ? बजट प्रोभिजन से ५x या ज्यादा|
- शिक्षा 'कर' भरिए, Income Tax भरिये सभी टैक्स भरिये और अपनी शिक्षा की व्यवस्था भी आप खुद करिए|
- स्वास्थ्य सेवा का भी यही हिसाब है|

व्यक्तिपरक

भारतीय युवाओं के लिए तलाश का सन्देश

1. अपने शारीर को मजबूत बनाएं |
2. दृढ़ ईक्षा शक्ति का निर्माण करें |
3. सामाजिक जिम्मेदारियों का निर्वहन करें |

आपकी आलोचना, असहमति, सुझाव का स्वागत है ।

सम्पर्क

अतुल कुमार
मो0-9905252725
H/3, डॉक्टर्स कॉलोनी, कंकड़बाग
पटना-800 020

प्रणव कुमार चौधरी
मो०-8969481918

डा० अविनाश प्रसाद
मो०-9934410252

जितना बन पड़ा है शुद्धी का ध्यान रखा है।
इसे पढ़ने वाले/समझने वाले
गलतियों को स्वयं ठीक कर लेने की कृपा करें।

✧ विनीत एवं क्षमाप्रार्थी
डॉ० विश्वेन्द्र कुमार सिन्हा

आमंत्रण

आत्मन्

आप जहाँ भी हैं, जो कुछ भी अच्छा कर रहे हैं, करते चलें, अन्य लोगों को भी अपनी सृजनात्मक उर्जा से उत्प्रेरित करते चलें, 'तलाश' तो आपके मन– प्राण में है।

वृहत एवं त्वरित बदलाव के लिए आपका हमारा जुड़ना आवश्यक है।

मिलें तो सही।

बातें तो हों,

हर माह के प्रथम रविवार की बैठक में शामिल हों,

– 'तलाश' परिवार

सम्पर्क :	फोन नं०
श्री शिव कुमार	9135020199
श्री प्रणव कुमार चौधरी	8969481918
डॉ० अविनाश प्रसाद	9934410252
श्री अजित कुमार सिन्हा	9334310425
ब्रिगे० के० एम० पी० सिंह	9801043097
डॉ० विश्वेन्द्र कुमार सिन्हा	9931025029

स्थान : एच-3, डॉक्टर्स कॉलोनी, कंकड़बाग पटना - 20

''तलाश के लक्ष्य एवं उद्देश्य''

1. एक अराजनैतिक, अहिंसात्मक, वैचारकि अभियान है।
2. आमलोगों के जीवन स्तर में सुधार हेतु सामाजिक जीवन के सभी आयामों के कार्य-कलापों में सुधार लाने का कार्य करेगा।
3. प्रत्येक नगरिक में 'सच को सच' एवं 'गलत को गलत' कहने की शक्ति पैदा करेगा।
4. प्रत्येक नागरिक को वाजिब तरीके से प्रतिदिन अपनी आय में वृद्धि करने हेतु प्रोत्साहित करेगा।
5. रचनात्मक सामूहिक सोच का निर्माण करने को कृत संकल्प है।
6. संबंधित सक्षम अधिकारियों/व्यक्तियों को सही दिशा में कार्य करने हेतु प्रेरित करेगा।
7. किसी प्रकार की सीधी सेवा नहीं प्रदान करेगा।
8. पूरे भारत में आम व्यक्ति को पहरुए की तरह जागरूक करने का काम करेगा। यह किसी भी क्षेत्र/ प्रकार की गलती दिखने पर उसे अहिंसात्मक ढंग से ठीक करेगा।
9. सदस्य बनने हेतु कोई शुल्क नहीं होगा एवं सदस्य अवैतनिक कार्यकर्त्ता के रूप में कार्य करेंगे।
10. इसका अपना कोई निधि/कोष नहीं होगा। संस्था के छोटे-मोटे खर्च सदस्यगण मिलकर वहन करेंगे।
11. इसका अन्य गैर सरकारी संगठन की तरह निबंधन नहीं होगा एवं इसमें कोई अध्यक्ष, सचिव अथवा कार्यकारिणी नहीं होगा।

कोष, कुर्सी, कौन! तीनों गौण!!